Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :196)

अनुवाद: उन लोगों का उदाहरण जो अपना माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उस बीज की तरह है जो सात बालें उगाता है।(उस से भी) बहुत बड़ा कर देता है और अल्लाह बड़ाई प्रदान करने वाला और स्थायी ज्ञान रखने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ   نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ   وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْد

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 3

अंक 32

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

26 ज़विल कअदा 1439 हिजरी कमरी 9 जहूर 1397 हिजरी शमसी 9 अगस्त 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

संभलकर पग उठाओ, प्रत्येक कार्य पूर्ण सतर्कता से करो और ख़ुदा से ही सहायता मांगो क्योंकि तुम अंधे हो। ऐसा न हो कि तुम न्यायप्रिय को अत्याचारी ठहराओ और सत्यवादी को झूठा। इस प्रकार तुम अपने ख़ुदा को रुष्ट कर दो और तुम्हारे सब पुण्य कर्म व्यर्थ हो जाएं।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

क़ुर्आन शरीफ़ में तुम्हारे लिए अति पवित्र उपदेशों का उल्लेख है जिनमें से एक यह है कि तुम अनेकेश्वरवाद की पूर्णतया अवहेलना करो कि अनेकेश्वरवादी मनुष्य मुक्ति के स्रोत से बहुत दूर है। तुम झूठ मत बोलो कि झूठ भी अनेकेश्वरवाद का ही एक भाग है। क़ुर्आन तुम्हें इन्जील की भांति यह नहीं कहता कि केवल बुरी दृष्टि और कामवासना के विचार से स्त्रियों की ओर देखना अवैध है, इसके अतिरिक्त शेष सब वैध है बल्कि वह कहता है कि कदापि न देखो न बुरी दृष्टि से न अच्छी दृष्टि से, कि इन सबसे तुम ठोकर खाओगे। तुझे चाहिए कि पराई स्त्री के सम्मुख आ जाने पर तेरी दृष्टि नीचे रहे, तुझे उसकी सूरत का कुछ ज्ञान न हो परंतु उतना ही जैसे एक धुंधली दृष्टि से वर्षा शुरू होते समय कोई किसी को देख पाए। क़ुर्आन तुम्हें इन्जील की भांति यह नहीं कहता कि इतनी शराब मत पियो कि मस्त हो जाओ बल्कि वह कहता है कि कदापि न पी अन्यथा तुझे ख़ुदा का मार्ग प्राप्त न होगा, ख़ुदा तुझ से वार्तालाप नहीं करेगा और न गंदगियों से पवित्र करेगा। वह कहता है कि यह शैतान का आविष्कार है तुम इससे बचो। क़ुर्आन तुम्हें इन्जील की भांति मात्र यह नहीं कहता कि अपने भाई पर अकारण क्रोधित मत हो बल्कि वह कहता है कि न केवल अपने क्रोध को वश में रख बल्कि- تَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ''तवासव बिल मरहमा (अलबलद-18) पर भी अमल कर और दूसरों को भी कह कि ऐसा करें। न केवल स्वयं दया कर बल्कि दया करने हेतु अपने समस्त भाइयों को वसीयत भी कर। क़ुर्आन तुम्हें इन्जील की भांति यह नहीं कहता कि अपनी स्त्री के बलात्कार करने के अतिरिक्त प्रत्येक अपवित्रता पर सब्र करो और तलाक़ मत दो बल्कि कहता है-

اَلطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ ''अत्तय्येबातो लित्तय्येबीना'' (अत्तौबह 27)

क़ुर्आन का सिद्धांत यह है कि अपवित्र पवित्र का साथी नहीं रह सकता। अत: यदि तेरी स्त्री बलात्कार तो नहीं करती परंतु अन्य लोगों को कामुक दृष्टि से देखती है और उनसे मेल-जोल रखती है और बलात्कार की प्रेरणा देती है यद्यपि कि अभी अंतिम सीमा तक नहीं पहुंची, अन्य लोगों को अपना नंगापन दिखाती है, अनेकेश्वरवादी है और तू जिस पवित्र ख़ुदा पर ईमान रखता है उस से वह विमुख है और यदि वह इन कृत्यों से न रुके तो तू उसे तालाक़ दे सकता है क्योंकि वह अपने कर्मों में तुझ से अलग हो गई, अब तेरे शरीर का अंग नहीं रही। अत: तेरे लिए वैध नहीं है कि तू बेहयाई से उसके साथ रहे। वह एक अपवित्र और बदबूदार अंग है जो काटने योग्य है। ऐसा न हो कि वह शेष अंगों को भी अपवित्र और गंदा कर दे और तू मर जाए। क़ुर्आन तुम्हें इन्जील की भांति यह नहीं कहता कि सौगन्ध कदापि न खा बल्कि व्यर्थ सौगन्ध खाने से रोकता है क्योंकि कुछ परिस्थितियों में निर्णय हेतु सौगन्ध एक माध्यम है और ख़ुदा किसी प्रमाण माध्यम को नष्ट करना नहीं चाहता क्योंकि इससे उसका दर्शन व्यर्थ होता है। यह स्वाभाविक बात है कि जब कोई मनुष्य एक परस्पर झगड़े वाले मामले में साक्ष्य न दे तब निर्णय हेतु ख़ुदा की साक्ष्य की आवश्यकता है और सौगन्ध ख़ुदा को साक्षी बनाने का नाम है। क़ुर्आन तुम्हें इन्जील की भांति यह नहीं कहता कि प्रत्येक स्थान पर अत्याचारी का मुकाबला न करना बल्कि वह कहता है-

جَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ

''जज़ाओ सय्येअतिन सय्येअतुन मिसलुहा फ़मन अफ़ा व असलहा फ़अजरोहू अलल्लाह'' (अश्शूरा 41)

अर्थात बुराई का बदला उतनी ही बुराई है जो की गई, जो मनुष्य क्षमा कर दे और गुनाह को माफ़ कर दे और इस माफ़ी और क्षमा से कोई सुधार होता हो न कि ख़राबी, तो ख़ुदा उससे प्रसन्न है और उसे वह उसका प्रतिफल प्रदान करेगा। अत: क़ुर्आन के अनुसार न प्रत्येक स्थान पर प्रतिशोध अच्छा है और न प्रत्येक स्थान पर क्षमा ही सराहनीय है, अपितु स्थान व अवसर के अनुकूल व्यवहार करना चाहिए। प्रतिशोध और क्षमा का आचरण सदा स्थान व अवसर के अनुकूल हो न कि प्रतिकूल, क़ुर्आन का यही उद्देश्य है। क़ुर्आन इन्जील की भांति यह नहीं कहता कि अपने शत्रुओं से प्रेम करो बल्कि वह कहता है कि इन्सान होने के नाते तेरा कोई भी शत्रु न हो। तेरी सहानुभूति सामान्य रूप से सबके लिए हो, पर जो तेरे ख़ुदा का शत्रु, तेरे रसूल का शत्रु, ख़ुदा की किताब का शत्रु है वही तेरा शत्रु होगा। अत: तू ऐसे लोगों को भी ख़ुदा की ओर बुलाने से और अपनी प्रार्थना से वंचित न रख । अनिवार्य है कि तू उनके कर्मों से शत्रुता रखे न कि उनके अस्तित्व से। तू कोशिश करे कि वे सुधर जाएं । इस संदर्भ में क़ुर्आन कहता है-

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِى الْقُرْبٰى

इन्नल्लाहा यामुरो बिल अदले वल इहसाने व ईताएज़िल क़ुरबा''(अन्नहल 91)

अर्थात ख़ुदा तुम से चाहता है कि समस्त मानव समाज से न्याय का व्यवहार करो, फिर इससे बढ़कर यह है कि उनसे भी भलाई करो जिन्होंने तुम्हारे साथ कभी कोई भलाई नहीं की, फिर इससे भी बढ़कर यह कि तुम प्रजा से इस प्रकार सहानुभूति और उदारतापूर्ण व्यवहार करो जैसे तुम उनके वास्तविक संबंधी हो जिस प्रकार माताएं अपने शिशुओं से सहानुभूति और उदारतापूर्ण व्यवहार करती हैं ; क्योंकि उपकार में अपने आपको प्रदर्शित

शेष पृष्ठ 9 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, मई 2016 ई (भाग-4)

☆ आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी यह भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि मुसलमान एक समय में बिगड़ जाएंगे और मूल शिक्षा भूल जाएंगे, तब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आएंगे और इस्लाम की सही शिक्षा बताएंगे, तुम अहमदी हो, लोगों को बताओ कि जो इस्लाम तुम अन्य मुसलमानों में देखते हो वह सही इस्लाम नहीं है, बल्कि इस्लाम जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लाए हैं और पवित्र कुरआन ने हमें बताया है वह शांति और प्रेम का इस्लाम है, और हम अहमदी लोग इस का पालन करते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ नासरातुल अहमदिया की कक्षा तथा सुनहरे उपदेश

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ नासरातुल अहमदिया की कक्षा

इसके बाद कार्यक्रम के अनुसार हुज़ूर अनवर के साथ नासरात की कक्षा शुरू हुई। कार्यक्रम का आरम्भ कुरआन की तिलावत के साथ शुरू हुआ जो प्रिया सबीका महमूद ने की, इस के बाद इस का उर्दू अनुवाद प्रिया फरीदा ताहिर ने प्रस्तुत किया। इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि डेनिश भाषा जानने वालों के लिए डेनिश में अनुवाद भी होना चाहिए। इसके बाद प्रिया साख़रह ताहिर ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफत के बारे में हदीस प्रस्तुत की और उसका उर्दू अनुवाद प्रिया श्माइलह शाहिद ने पेश किया।

हज़रत हुज़ैफह रज़ि अल्लाह वर्णन करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम में नबुव्वत स्थापित रहेगी जब तक अल्लाह तआला चाहेगा फिर वह उसे उठा ले जाएगा और नबुव्वत की प्रणाली पर ख़िलाफत स्थापित होगी। फिर अल्लाह जब चाहेगा इस नेअमत को उठा लेगा फिर उस की तकदीर के अनुसार कष्ट देने वाली बादशाहत स्थापित होगी। जब यह युग समाप्त होगा तो उस की दूसरी तकदीर के अनुसार उत्पीड़न करने वाली बादशाहत स्थापित होगी यहां तक कि अल्लाह तआला का रहम जोश में आ जाएगा और अत्याचार तथा उत्पीड़न के युग को समाप्त कर देगा। इस के बाद फिर नबुव्वत की प्रणाली पर ख़िलाफत स्थापित होगी। यह फरमा कर आप खामोश हो गए।

इस के बाद प्रिया वनीसा अहमद ने ख़ुलफाए राशदीन के विषय पर तक़रीर की और चारों ख़लीफाओं के बारे में संक्षेप से बताया।

इस के बाद प्रिया अलीशा बट साहिबा, लबीना जावेद, मुबश्शर चीमा, अनीका लईक मशअल अहमद और प्रिया तारिक ने नीचे लिखी नज़्म को अच्छी आवाज़ के साथ प्रस्तुत किया।

हमारा ख़िलाफत पे ईमान है
यह मिल्लत की तंज़ीम की जान है
ख़िलाफत से जिंदा दिलों में ख़ुदा
ख़िलाफत गरीबों का है आसरा
न क्यों जान वो दिल से हों उस पर फिदा
उसी के है दम से हमारी बका
न होगा कभी अपना इख़लास कम
बढ़ेगा इसी से हमारा कदम
ख़िलाफत का जब तक रहेगा क़याम
न कमज़ोर होगा हमारा निज़ाम

इसके बाद प्रिया बसमह चीमा ने ख़िलाफत की बरकतों के हवाले से हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का निम्नलिखित उद्धरण पेश किया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम रसाला अल-वसीयत में ख़िलाफत के बारे में फरमाते हैं

"(अल्लाह तआला) दो प्रकार की कुदरत प्रकट करता है :

(1) प्रथम स्वयं नबियों के हाथ से अपनी कुदरत का हाथ दिखाता है।

(2) दूसरे ऐसे समय में जब नबी के देहांत के पश्चात कठिनाइयों का सामना पैदा हो जाता और दुश्मन ज़ोर में आ जाते हैं और समझते हैं कि अब काम बिगड़ गया और विश्वास कर लेते हैं कि अब यह जमाअत मिट जायेगी और स्वयं जमाअत के लोग भी शंका में पड़ जाते हैं और उनकी कमरें टूट जाती हैं तथा कई अभागे विमुख होने का मार्ग धारण कर लेते हैं। तब ख़ुदा तआला दूसरी बार अपनी शक्तिशाली कुदरत प्रकट करता है और गिरती हुई जमाअत को संभाल लेता है। अत: वह जो अंत तक धैर्य रखता है ख़ुदा तआला के इस चमत्कार को देखता है जैसा कि हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ के समय में हुआ जब कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मौत एक बे-वक्त मौत समझी गई तथा बहुत से ना समझ बादियानशीन (वनवासी) विमुख हो गए और सहाबा भी दु:ख के कारण दीवानों की तरह हो गए। तब ख़ुदा तआला ने हज़रत अबुबकर सिद्दीक को खड़ा करके पुन: अपनी शक्ति का नमूना दिखाया ।.........

सो ! हे प्रियो ! जब कि पुरातन से अल्लाह की पद्धति यही है कि खुदा तआला दो कुदरतें दिखलाता है ताकि विरोधियों की दो झूठी ख़ुशियों को मिटा कर दिखलादे सो अब सम्भव नहीं है कि ख़ुदा तआला अपनी पुरातन पद्धति को छोड़ देवे । इस लिए तुम मेरी इस बात से जो मैंने तुम्हारे पास ब्यान की दुखी मत हो और तुम्हारे दिल परेशान न हो जाएँ क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी कुदरत का भी देखना आवश्यक है। और उस का आना तुम्हारे लिए उत्तम है क्यों कि वह सदैव है जिस का काल कयामत तक नहीं टूटेगा और वह दूसरी कुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊँ। परन्तु मैं जब जाऊँगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी कुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो सदा तुम्हारे साथ रहेगी जैसा कि ख़ुदा का ब्राहीने अहमदिया में वादा है और वह वादा मेरे अस्तित्व के संबंध में नहीं है बल्कि तुम्हारे संबंध में वचन है जैसा कि ख़ुदा फ़र्माता है कि मैं इस जमाअत को जो तेरे मानने वाले हैं क़यामत तक दूसरों पर विजय दूँगा।

इस के बाद प्रिया अम्मान सैयद और प्रिया उज्मा बिलाल ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़लीफा के शीर्षक पर तकरीर की। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने बच्चियों को सवाल करने की आज्ञा दी।

* एक बच्ची ने सवाल किया कि जब आप पधारे थे तो एक नज़्म पढ़ने के बारे में वर्णन हुआ था। क्या इस को अब पढ़ लें? यह नज़्म दुर्रे-समीन की है और "सुबहान मय्यरानी" है। एक और लड़की ने कसीदा सुनाने का अनुरोध किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने केवल दो शेर पढ़ने का आदेश दिया और शेर "या रब्बे सल्ले अला नबिय्ये कदाइमन" को दोबारा पढ़ने का उपदेश दिया।

* एक बच्ची ने सवाल किया कि हुज़ूर अनवर अब तक कितनी बार कुरआन की तिलावत पूर्ण कर ली है।? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने बहुत बार कभी गिनती नहीं की साल में 6 या 7 बार पूरा हो जाता है।

* एक बच्ची ने पूछा कि जब आप ख़लीफा बने तो आप को कैसा महसूस हुआ?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैं पहले भी कई बार वर्णन कर चुका हूं। वीडियो दोबारा देख लें बहुत बोझ होता है बहुत कठिन काम होता है।

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

बदरी सहाबा हज़रत सुबई बिन क़ैस, हज़रत उनैस बिन क़तादा, हज़रत मुलैल बिन वबरह. हज़रत नोफल बिन अब्दुल्लाह, हज़रत वदीअः बिन अमरो , हज़रत यज़ीद बिन मुनज़िर, हज़रत ख़ारजा बिन हुमैर अशजई, हज़रत सराकह बिन अमरो, हज़रत अबादः बिन क़ैस, हज़रत अबू ज़य्याह बिन साबित बिन नोमान, हज़रत अनसह, हज़रत अबु कबशः सुलीम बिन कबशः, हज़रत मरसद बिन अबी मरसद, हज़रत अबु मरसद बिन कन्नाज़, हज़रत सलीत बिन क़ैस, हज़रत मजज़र बिन ज़य्याद, हज़रत हुबाब बिन मुनज़िर, हज़रत रफेअ बिन रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन की जीवनी और सीरत का ईमान वर्धक वर्णन।

कुछ सहाबा के आपस के मामलों में जो रिवायतों में मतभेद मिलते हैं हमारा काम नहीं कि इन मतभेदों को अपने दिल में जगह दें। अल्लाह तआला की माफी और दया बहुत व्यापक है। उनके विषय में अब बजाय कुछ सोचने और कहने के हमें अपने मामलों को संभालना चाहिए और अपना सुधार करना चाहिए। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हम हमेशा एक रहें और एकता पर कायम रहें और नेकियों में बढ़ने वाले हों।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 6 जुलाई 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ
إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आजकल बदर के सहाबा का ज़िक्र कर रहा हूं। इतिहास और रिवायतों में कुछ सहाबा की जीवनी और घटनाए बहुत विस्तार से मिलती हैं लेकिन कई ऐसे हैं जिनके बहुत मुख़्तसर हालात मिलते हैं। लेकिन बहरहाल जंगे बदर में शामिल होने से उन्हें जो स्थान है वे तो अपनी जगह पर कायम है। इसलिए चाहे कुछ पंक्तियों का ही उल्लेख हो वह वर्णन होना चाहिए। आज के लिए जिन सहाबा का उल्लेख होना है उनमें कुछ ऐसे हैं जिन का बहुत संक्षिप्त उल्लेख है।

इनमें सबसे पहले सुबई बिन क़ैस बिन अनीशा हैं। कुछ ने आप के दादा का नाम असह और कुछ ने आयशा भी लिखा है। बहरहाल आप अंसारी और खज़रजी थे। जंग बदर तथा उहद में शामिल हुए।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 407 सुबई बिन क़ैस मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत)

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 403 सुबई बिन क़ैस और इबादा बिन क़ैस मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1990 ई)

आप की माँ का नाम ख़दीजा सुपुत्री अम्रो बिन ज़ैद है। आप का एक बेटा था जिसका नाम अब्दुल्लह था और उसकी माँ कबीला बनो जदारह से थी। बचपन में उसकी मृत्यु हो गई। इसके अलावा आपका कोई बच्चा नहीं था। हज़रत अबादह इब्न कैस आपके भाई थे। हज़रत सबईअ के एक वास्तविक भाई ज़ैद बिन कैस भी थे।

दूसरे भाई हज़रत उनैस बिन कतादाह हैं। उन की वफात उहद की जंग के अवसर पर हुई। कुछ लोगों का कहना है कि उन का नाम अनस है। बहर हाल जो सहीह नाम है वह उनैस है। मुहम्मद बिन इस्हाक़ और मुहम्मद बिन उमर ने उनैस ही लिखा है। बदर में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शरीक थे और जंगे उहद में यह शहीद हुए। आपकी भी कोई औलाद नहीं थी। और एक रिवायत है कि ख़नसाय सुपुत्री ख़ुदाम हज़रत उनैस बिन क़तादा के निकाह में थीं जब वह उहद के दिन शहीद हुए।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 1 पृष्ठ 305-306 उनैस बिन क़तादा मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत)

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 353-354 और मन बिनी उबैद बिन जायेद मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1990 ई)

फिर एक सहाबी थे हज़रत मुलैल बिन वबरह। उनके नामों के बारे में विभिन्न रिवायतें हैं। इब्ने इस्हाक़ और अबू नईम ने उनका नाम मुलैल बिन वबरह बिन अब्दुल करीम बिन ख़ालिद बिन अजलान वर्णन किया है। जबकि अबू उम्र और कलबी ने मुलैल बिन वबरह बिन खालिद बिन अजलान वर्णन किया है। अब्दुल करीम मध्यम में से बाहर चला गया। आप का सम्बन्ध ख़ज़ज की शाख बनू अजलान से था। इसमें जंग बदर और जंग उहद में शामिल थे।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 5 पृष्ठ 251 मुलैल बिन वबरह मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत)

आप की औलाद में ज़ैद और हबीबा थीं जिनकी माँ उम्मे ज़ैद सुपुत्री नसला बिन मालिक थीं। हज़रत मुलैय की औलाद आगे नहीं चली।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 416 मलील बिन वेबरह मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1990 ई)

आप को इब्ने खालिद बिन अजलान कहा जाता था। एक रिवायत में लिखा गया है कि आप जंग बदर और बाकी सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शरीक हुए।

(अल्इकमाल फी रफअल इरतेयाब अन अलमौतलफ जिल्द 7 पृष्ठ 222 अध्याय मलकान तथा मलकान तथा अध्याय मुलैल तथा मुलैक बहाला मक्तबा अशशामला)

फिर एक सहाबी हज़रत नोफल बिन अब्दुल्लह बिन नज़ला हैं। उन की वफात जंग उहद में हुई। कुछ ने आप का नाम नोफल बिन सअलबा बिन अब्दुल्लाहह बिन नज़ला बिन मालिक बिन अजलान वर्णन किया है। आप जंग बदर और जंग उहद में शरीक हुए और जंग उहद में अपने शहीद हुए। आपकी नस्ल आगे नहीं बढ़ी।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 5 पृष्ठ 346-347 नोफल बिन सअलबा मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत)

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 415 नोफल बिन अब्दुल्लाहह मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1990 ई)

फिर एक सहाबी हज़रत वदीआ बिन अम्रो हैं इब्ने कलबी ने उनका नाम वदीअः बिन अम्रो बिन यसार बिन औफ वर्णन किया है। और अबू मअशर ने उनका नाम रफाह बिन अम्रो बिन जराद वर्णन किया है। आपके संबंध बनो जुहैना से था जो बनू नज्जार के सहयोगी थे। आप जंग बदर और जंग उहद में शरीक हुए। हज़रत रबीअ बिन अमरो आपके भाई थे।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 377 वदीअः बिन अमरो मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1990 ई)

(अलअसाबः फी तमीज़ुज़ सहाबा जिल्द 2 पृष्ठ 392 राबिया बिन अम्रो मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1995 ई)

फिर एक सहाबी हज़रत यज़ीद बिन मुनज़िर बिन सरह बिन खनास हैं। आपका संबंध कबीला बनू ख़ज़रज से था और बैअत उक़बा में शामिल हुए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत यज़ीद बिन मुनज़िर और आमिर बिन राबिया

के बीच भाईचारा स्थापित फ़रमाया था। आप जंग बदर और जंग उहद में शरीक हुए। जब आप की मृत्यु हुई तो उनकी कोई औलाद नहीं थी। आप के भाई मअकल बिन मुनज़िर भी बैअत उक़बा, जंग बदर और जंग उहद में शरीक थे।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 432 यज़ीद बिन अलमुनज़र और अख़ूह मअकल बिन यसारर मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1990 ई)

(असदुल ग़ाबह जिल्द 5 पृष्ठ 473 यज़ीद बिन अलमनज़र मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत)

फिर एक सहाबी हज़रत ख़ारजा बिन हुमैर अशजई हैं। तारीख़ों में आप के नाम में भी काफी मतभेद है। इब्ने इस्हाक़ ने आपका नाम ख़ारजा बिन हमीर बताया है। मूसा बिन अक़बा ने आप का नाम हारस: बिन हमीर वर्णन किया है। वाकदी आप का नाम हमज़ा बिन हमीर वर्णन किया है। अपने पिता के नाम के बारे में भी मतभेद है। कुछ ने हुमैरह वर्णन किया है। जबकि कुछ ने पिता का नाम जमीरह और जमीर लिखा है। बहरहाल इस बात पर सभी सहमत है कि आपका संबंध कबीला अशजअ से था और कबीला बनू ख़ज़रज के सहयोगी थे। अपने भाई का नाम अब्दुल्लाह बिन हमीर है जो कि जंग बदर में आप के साथ शामिल हुए थे।

(अल्असाब: फी तमीज़ुज़ सहाबा जिल्द 1 पृष्ठ 704 हारसह: बिन हमीर मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1995)

(असदुल ग़ाबह जिल्द 1 पृष्ठ 649 हारसह: बिन हमीर मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत)

फिर हज़रत सुराकह बिन अम्रो का उल्लेख है यह अंसारी थे। उनका पूरा नाम सुराकह बिन अम्रो बिन अतिया बिन खनसाय अंसारी था। उनकी मृत्यु जमादी अव्वल 8 हिजरी में जंग मौतह में हुई। उनका पूरा नाम सुराकह बिन अम्रो बिन अतिया बिन ख़नसाय अंसारी था। उनकी मां का नाम अतीलह सुपुत्री क़ैस था और सुराकह का संबंध अंसार के कबीला बनू नज्जार से था। आप के इस्लाम स्वीकार करने का बारे में मतभेद है। कुछ के पास आप ने हिजरत नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कुछ पहले और कुछ के निकट आप ने हिजरत नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के थोड़ी देर बाद इस्लाम स्वीकार कर लिया। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मिहजअ मौला उम्र और सुराकह बिन अम्रो के बीच भाईचारा स्थापित फ़रमाया। आप ने जंग बदर, जंग उहद, जंग खंदक और ख़ैबर में भाग लिया तथा उन्हें सुलह हुदैबिया और उमरतुल कज़ाय के अवसर पर भी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का साथ प्राप्त हुआ। हज़रत सुराकह बिन अमरो उन भाग्यशाली सहाबा में से थे जिन्हें बैअत रिज़वान में शामिल होने का सौभाग्य मिला और उनकी नस्ल आगे नहीं चली। उनकी शहादत जैसा कि बताया मैं जमादी अव्वल 8 हिजरी में जंग मौतह के दौरान हुई।

(अल्इस्तियाब जिल्द 2 पृष्ठ 580 सुराकह बिन अम्रो मुद्रित दारुल हैल बैरूत 1992) (अल्असाब: फी तमीज़ुज़ सहाबा जिल्द 3 पृष्ठ 34 सराकह बिन अम्रो मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1995) (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 393 सुराकह बिन अम्रो मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1990 ई) (अयनुल असर जिल्द 1 पृष्ठ 233 दारुल कलम बैरूत 1993 ई)

फिर एक सहाबी हज़रत अबाद: बिन क़ैस हैं। उनकी मृत्यु भी 8 हिजरी में जंग मौतह में हुई। उनके नाम में भी मतभेद पाया जाता है। आप का नाम उबादा बिन क़ैस बिन ईशा भी मिलता है। इसी तरह आप के दादा के नाम अबसह भी वर्णन किया गया है। हज़रत अबाद: हज़रत अबू दरदाय के चाचा थे। हज़रत अबाद: जंग बदर, उहद, खंदक और ख़ैबर में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के संग थे। सुलह हुदैबिया में भी शरीक थे और जंग मौतह में आप की शहादत हुई।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 403 अबाद: बिन क़ैस मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1990 ई) (असदुल ग़ाबह जिल्द 3 पृष्ठ 154 अबाद: बिन क़ैस मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत)

फिर हज़रत अबू ज़य्याह बिन साबित बिन नोमान हैं। उनकी मृत्यु 7 हिजरी में हुई। एक रिवायत में आपका नाम उमेर बिन साबित बिन नोमान बिन उमय्या बिन अमरउल कैस और दूसरी रिवायत के अनुसार नोमान बिन साबित बिन अमरउल कैस है। आप अपने उपनाम से मशहूर हैं जो अबू ज़य्याह है। जंग बदर, उहद, ख़ंदक़ और हुदैबिया में शरीक हुए और जंग ख़ैबर 7 हिजरी में शहीद हुए। वर्णन किया गया है कि एक यहूदी ने आप के सिर पर वार किया जिससे आप का सिर कट गया जिससे आपकी शहादत हो गई।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 6 पृष्ठ 175 अबू ज़य्याह बिन साबित मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत)(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 364-365 अबू ज़ीअह मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1990 ई)

फिर हज़रत अनसह हैं। उनकी मृत्यु जंग बदर में हुई। लेकिन इसमें मतभेद है। कुछ कहते हैं कि हज़रत अबूबकर की ख़िलाफत तक जीवित थे। बहरहाल आप आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आज़ाद किए गए हब्शी ग़ुलाम थे। आपका नाम अनसह था और अबू अनसह भी आता है। इसी तरह कुछ के निकट आप का उपनाम अबू मसरूह था। हज़रत अनसह दावते इस्लाम के शुरुआत में ही इस्लाम स्वीकार करने वाले थे और हिजरत के ज़माना में मदीना गए और हज़रत साद बिन खसीमह के मेहमान हुए और जब तक जीवित रहे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा आप का प्रिय काम था। आप इतने आज्ञाकारी थे कि उनके बारे में आता है कि जब बैठते थे तो तब भी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अनुमति लेकर बैठते थे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंगे बदर में शरीक हुए।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 1 पृष्ठ 301-302 अनसह मुद्रित दारुल कुतुब अलइल्मिया बैरूत) (सैरुस्सहाब: शाह मोईनुद्दीन अहमद नदवी जिल्द 2 भाग 2 मुख्य 587 मुद्रित दारुल इशाअत कराची) (अल्असाब: फी तमीज़ुज़ सहाबा जिल्द 1 पृष्ठ 283 इनस: मौला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम प्रकाशन दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1995)

फिर हज़रत अबू कबश:सलीम हैं। उनका उपनाम अबू कबश:है। उनकी मृत्यु हज़रत उमर के ज़माना ख़िलाफत में हुई। कुछ के निकट आपका नाम सलमा था। आप आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्वतंत्र किए गए फारसी ग़ुलाम थे। आप बदरी सहाबी हैं आपका जन्म औस की धरती पर हुआ। आप के वतन और वंश के बारे में विभिन्न रिवायतें हैं। कुछ फारसी, कुछ दौसी और कुछ मक्की बताते हैं। आप इस्लाम के आरम्भ के करीब क ज़माने में इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए और हिजरत की अनुमति मिलने पर मदीना चले गए और बदर सहित सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रहे।

(अल्असाब: फी तमीज़ुज़ सहाबा जिल्द 7 पृष्ठ 284 अबू कबश:मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1995) (सैरुस्सहाब: से शाह मोईनुद्दीन अहमद नदवी जिल्द 2 भाग 2 मुख्य 579 मुद्रित दारुल इशाअत कराची)

जब हज़रत अबू कबश:ने मदीना जाने के लिए हिजरत की तो हज़रत कुलसुम बिन अलहदम के यहाँ रुके और एक रिवायत के अनुसार आप हज़रत सअद बिन खसीमह के पास रुके। हज़रत उमर के ख़लीफा निर्धारित होने के पहले दिन हज़रत अबू कबश: की मृत्यु हुई। यह 22 जमादी अस्सानी 13 हिजरी की बात है।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 36 अबू कबश:मुद्रित दारुल कुतुब अलइल्मिया बैरूत 1990 ई)

फिर हज़रत मरतद बिन अबी मरतद हैं। वह सफर तीन हिजरी में रजीअ स्थान पर फौत हुए। आप एक बदरी सहाबी थे। आप हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब के सहयोगी थे। आप अपने पिता के साथ बदर में थे। आप ने इस्लाम के शुरू में इस्लाम स्वीकार किया और बदर से पहले हिजरत करके मदीना आ गए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप का भाईचारा हज़रत ओस बिन सामत से कर दिया। बदर के दिन यह घोड़े पर हाज़िर हुए जिसका नाम सब्बल था। इब्ने इस्हाक़ ने लिखा है कि हज़रत मरतद रज़ियल्लाहो अन्हो सैन्य दस्ते के सालार थे जिसे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रजीअ की तरफ रवाना किया था। यह घटना सफर महीने तीन हिजरी में हुई और कुछ का मानना है कि इस दल की कमान हज़रत आसिम बिन साबित पास थी।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3 पृष्ठ 35 अबू मरतद। मरतद बिन अबी मरतद मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1990 ई) (असदुल ग़ाबह जिल्द 5 पृष्ठ 133 मरतद बिन अबी मरतद मुद्रित दारुल कुतुब अलइल्मिया बैरूत)

उनकी शहादत की घटना इस तरह है कि बनू अज़ल और कर्राह ने इस्लाम लाने का दिखावा करके आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से धार्मिक शिक्षा के लिए कुछ शिक्षक भिजवाने का अनुरोध किया जिस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने (इसके बारे में रिवायतों में मतभेद है) हज़रत मरतद रज़ियल्लाहो अन्हो या हज़रत आसिम रज़ी अल्लाह तआला ने अनाहो के अधीन एक समूह भेजा। ये लोग जब रजीअ स्थान पर पहुंचे थे कि बनू खज़ील नंगी तलवारें लेकर आ गए और कहा कि हमारा लक्ष्य तुम्हें मारना नहीं बल्कि तुम्हारे बदले हम मक्का वालों से माल प्राप्त करना चाहते हैं और हम तुम्हारी जान की रक्षा का वादा करते हैं। इस

पर हज़रत मरतद रज़ियल्लाहो अन्हो और खालिद रज़ि और आसिम रज़ि अल्लाह ने कहा कि हमें आप लोगों के वादा पर भरोसा नहीं है और इस तरह लड़ते हुए तीनों ने जान दे दी।

(सैरुस्सहाब: शाह मोईनुद्दीन अहमद नदवी जिल्द 2 भाग 2 मुख्य 555 मुद्रित दारुल इशाअत कराची)

फिर एक सहाबी हैं हज़रत अबू मरसद कन्नाज़ बिन अलहुसैन ग़नवी। आप की वफात 12 हिजरी में हुई। कुछ लोगों के निकट, उनका उपनाम अबू हुसैन था। आप शाम के निवासी थे। उन्होंने इस्लाम के आरम्भ में ही स्वीकार इस्लाम किया और हिजरत की आज्ञा के बाद मदीना आ गए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप की हज़रत अबाद: बिन सामत से भाईचारा फरमा दी।

(सैरुस्सहाब: शाह मोईनुद्दीन अहमद नदवी जिल्द 2 भाग 2 पृष्ठ 581 मुद्रित दारुल इशाअत कराची) (अल्असाब: फी तमीज़ुज़ सहाबा जिल्द 7 पृष्ठ 305 अबू मरतद ालगनवी मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1995)

जब हज़रत अबू मरसद रज़ियल्लाहो अन्हो और उनके बेटे मरसद ने मदीने की तरफ़ हिजरत की तो दोनों हज़रत कुलसुम बिन अलहदम के पास ठहरे। कुछ के निकट आप दोनों हज़रत साद बिन ख़ैसमह के पास ठहरे। हज़रत अबू मरसद सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ उपस्थित हुए।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 34-35 अबू मरसद मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1990 ई)

हज़रत अबू मरसद को इतिहास में यह स्थान प्राप्त है कि हज़रत हातिब बिन अबी बलत: ने फतेह मक्का से पहले अपने बाल-बच्चों की रक्षा के विचार से मक्का वालों को गुप्त रूप से एक पत्र के द्वारा सूचना देनी चाही। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सूचना हो गई। अल्लाह तआला ने आपको बताया। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीन सवारों को इस महिला की तरफ भेजा जो पत्र लेकर जा रही थी। इन सवारों ने उस पत्र को हासिल कर लिया। उनमें से एक हज़रत अबू मरसद थे। हज़रत अली से रिवायत है आप फरमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे और अबू मरसद ग़नवी और जुबैर को भेजा और हम घुड़सवार थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया आप रवाना हो जाओ यहाँ तक कि जब तुम रोज़ह ख़ाख़ तक पहुँचो। यह एक स्थान है तो वहाँ तुम्हें मूर्तिपूजकों में से एक महिला मिलेगी जिसके पास हतिब बिन अबी बलत: द्वारा मूर्तिपूजकों के नाम एक पत्र है। यह बुखारी की रिवायत है।

(सही अलबुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी अध्याय फज़ल मिन शहद बदर हदीस 3983)

आप ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से एक हदीस वर्णन की है मुस्लिम और बग़वी आदि में उनकी यह हदीस है। कहते हैं कि मैंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते सुना कि कब्रों पर न बैठो और न उनकी तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ो।

(अल्असाब: फी तमीज़ुज़ सहाबा जिल्द 7 पृष्ठ 305 अबू मरतद ालगनवी मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1995 ई)

उनकी मृत्यु हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ के ख़िलाफत के ज़माना में 12 हिजरी में 66 साल की उम्र में हुई।

(सैरुस्सहाब: शाह मोईनुद्दीन अहमद नदवी जिल्द 2 भाग 2 मुख्य 581 मुद्रित दारुल इशाअत कराची)

फिर एक सहाबी हैं हज़रत सलीत बिन क़ैस बिन अम्रो। उन की वफात 14 हिजरी में हुई। हज़रत सलत बिन क़ैस बिन अम्रो बिन उबैद बिन मलिक उनका पूरा नाम है। हज़रत सलीत बिन क़ैस और हज़रत अबू सरमह दोनों ने इस्लाम स्वीकार करने के बाद परिवार बनू आदि बिन नज्जार की मूर्ति तोड़ दी। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब हिजरत करके मदीना पधारे तो जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऊंट पर बैठकर मदीना शहर में प्रवेश कर रहे थे तो हर कबीला यह चाहता था कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके घर में ठहरें। जब आप की ऊंटनी बनू अदी के घर के पास पहुंची और ये लोग आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मामा थे क्योंकि सलमा सुपुत्री अम्रो, अब्दुल मुत्तलिब की माँ इसी कबीले से थीं। उस वक़्त हज़रत सलीत बिन क़ैस, अबू सलीत और उसैरह बिन अबू ख़रजा ने रोकना चाहा तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरी ऊंटनी को छोड़ दो कि इस समय यह मामूर (तैनात) है। अर्थात जहां ख़ुदा की इच्छा होगी वह बैठ जाएगी। हज़रत सलीत बदर और उहद और ख़ंदक और सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे। जंग जसर अबी उबैद 14 हिजरी को हज़रत उमर के ख़िलाफत के ज़माना में यह शहीद हुए।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 388 सलीत बिन क़ैस मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1990 ई) (सीरत इब्ने हश्शाम पृष्ठ 229 अध्याय हिदरतुल रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुद्रित दार इब्ने हज़्म बैरूत 2009 ई)

हज़रत मजज़र बिन ज़्यादा। जंग उहद में शहीद हुए थे। मजज़र आपका उपनाम था इसका मतलब है गोल-मटोल शरीर। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मजज़र और हज़रत उक्काशा बिन बक़ीर के बीच भाईचारा स्थापित फरमाया था। दूसरी जगह यह आया है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मजज़र और हज़रत उक्काशा बिन मुहसिन के बीच भाईचारा स्थापित फरमाया था। हज़रत मजज़र जंग बदर और जंग उहद में शरीक हुए।

(अल्असाब: फी तमीज़ुज़ सहाबा जिल्द 5 पृष्ठ 572-573 अलमजज़र बिन ज़याद मुद्रित दारुल कुतुब अलइल्मिया बैरूत 1995) (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 417 अलमजज़र बिन ज़याद मुद्रित दारुल कुतुब अलइल्मिया बैरूत 1990 ई) (अयूनुल असर जिल्द 1 पृष्ठ 232-233 बाब ज़िक्र अलमवाख़ात मुद्रित दारुल कलम बैरूत 1993 ई)

इब्ने इस्हाक़ ने बयान किया है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू बखतरी को मारने से मना फरमाया था क्योंकि मक्का में उसने लोगों को नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को चोट पहुँचाने से रोका था। (इसके बदले में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि उसे कत्ल नहीं करना) और वह खुद भी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कोई कष्ट नहीं पहुंचाता था और वह उन लोगों में से था जो इस समझौते के ख़िलाफ खड़े हुए थे जो कुरैश ने बनू हाशिम और बनू मुतलब के विरुद्ध किया था। हज़रत मजज़र अबू बख़तरी से मिले और कहा कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें तुम्हारे कत्ल से रोका है। अबू बखतरी के साथ उसका एक साथी भी था जो उसके साथ मक्का से निकला था। उसका नाम जनाद बिन मलीहा था जो बनू लैस से था। अबू बख़तरी का नाम आस था। उसने कहा, मेरे साथी के बारे में मेरा आदेश क्या है? हज़रत मजज़र ने कहा कि नहीं। अल्लाह की कसम! हम तुम्हारे साथी को नहीं छोड़ेंगे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें सिर्फ तुम्हारे अकेले से संबंधित आदेश दिया है। उन्होंने कहा कि यदि हम मरेंगे तो हम दोनों एक साथ मरेंगें। यह गवारा नहीं कर सकता कि मक्का की महिलाएं यह बयान करती फिरें कि मैं अपने जीवन के लिए अपने साथी को छोड़ दिया। फिर वे दोनों उनसे (हज़रत मजज़र से) लड़ाई के लिए तैयार हो गए और लड़ाई में हज़रत मजज़र ने उसे मार दिया। हज़रत मजज़र रज़ी अल्लाह अन्हो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा कि उस ज़ात की कसम! जिसने आप को सच के साथ भेजा है मैंने उसे बहुत आग्रह किया कि वह बंदी हो जाए और उसे आप के पास ले आता लेकिन वह उस पर रज़ामंद नहीं हुआ और अंत में वह मुझसे लड़ा और मैंने उसका कत्ल कर दिया।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 5 पृष्ठ 59-60 अलमजज़र बिन ज़ैद मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत) (अयुलन असर जिल्द 1 पृष्ठ 301 अध्याय जंग बदर प्रकाशित दारुल कलम बैरूत 1993 ई)

हज़रत मजज़र की औलाद मदीना और बग़दाद में मौजूद थी। अभय वजज़ह से रिवायत है कि जो तीन आदमी एक कब्र में दफन किए गए थे वे मजज़र बिन जयाद नोमान बिन मालिक और अब्दह बिन हसहास थे।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 417 अलमजज़र बिन ज़याद मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1990 ई)

लेकिन एक रिवायत में यह भी आता है कि हज़रत अनीसह सुपुत्री अदि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरा बेटा अब्दुल्लाह जो बदरी है जंग उहद में शहीद हो गया है। मेरी इच्छा है कि मैं अपने बेटे को अपने मकान के पास दफन करूं ताकि मुझे उस की निकटता प्राप्त रहे। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अनुमति दे दी और यह फैसला भी हुआ कि हज़रत अब्दुल्लाह के साथ उनके दोस्त हज़रत मजज़र को भी एक ही कब्र में दफनाया जाए। इसलिए दोनों दोस्तों को एक ही कंबल में लपेट कर ऊंट रखकर मदीना भेजा गया उनमें से अब्दुल्लाह ज़रा दुबले पतले थे और मजज़रो मोटे और भारी थे। कहते हैं रिवायत में

आता है कि ऊंट पर दोनों बराबर उतरे अर्थात वज़न एक जैसा था। उतारने वालों ने देखा तो लोगों ने इस पर आश्चर्य व्यक्त किया तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि दोनों के कर्मों ने उनके बीच बराबरी कर दी।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 7 पृष्ठ 31 अनीस सुपुत्री अदी मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत)

हज़रत हबाब बिन मुनज़िर बिन जमोह एक सहाबी हैं। उनकी मृत्यु हज़रत उमर के दौरे खिलाफ़त में हुई। हज़रत हबाब बिन मुनज़िर जंग बदर, उहद, ख़ंदक और बाकी सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रहे। जंग उहद में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ दृढ़ रहे और मौत पर आप बैअत की।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 1 पृष्ठ 665 हबाब बिन मुनज़िर मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत) (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 428 हबाब बिन मुनज़िर मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1990 ई)

उनके बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने भी सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन में लिखा है कि

"जिस जगह इस्लामी लश्कर ने डेरा डाला था वह कोई ऐसी अच्छी जगह न थी। इस पर हज़रत हबाब बिन मुनज़िर ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा कि क्या आप ने इस जगह को अल्लाह तआला के इल्हाम के अधीन पसंद किया है या सिर्फ इसे सैन्य रणनीति के रूप में धारण किया है? आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, इस में कोई ख़ुदा तआला का आदेश नहीं है। अगर आप कोई सलाह देना चाहते हो तो बताओ। हज़रत हबाब इब्न मुनज़िर ने इस पर कहा, मुझे लगता है कि यह जगह अच्छी नहीं है। बेहतर होगा कि आगे बढ़ कर क़ुरैश निकटतम चश्मा को कब्ज़ा में कर लिया जाए। मैं इस चश्मा को जानता हूं इस का पानी भी अच्छा है और प्राय: काफी प्रचुरता से पाया जाता है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस प्रस्ताव को पसंद किया और चूँकि अभी क़ुरैश टीले के परे डेरा डाले पड़े थे और यह चश्मा खाली था, मुसलमान आगे बढ़कर इस चश्मे पर काबिज़ हो गए। लेकिन जैसा कि कुरआन में इशारा पाया जाता है, उस समय चश्मा में पानी अधिक नहीं पाया गया था और मुस्लिमों को पानी की कमी महसूस हुई थी। फिर यह भी था कि घाटी के इस तरफ जहां मुसलमान थे वह इतनी अच्छी जगह हीं थी बल्कि यह बहुत रेतीली थी क्योंकि पैर ठीक से जमते नहीं थे। फिर अल्लाह की कृपा इस तरह हुई कि कुछ बारिश हो गई जिससे मुसलमानों को यह मौका मिला कि गड्ढे बनाकर पानी जमा कर लें और यह भी लाभ हो गया कि रेत जम गई और पैर ज़मीन में धंसने से रुक गए और दूसरी ओर क़ुरैश वाली जगह कीचड़ की सी स्थिति हो गई और उस तरफ का पानी भी कुछ गन्दा और मैला हो गया।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 356-357)

हज़रत इब्ने अब्बास वर्णन करते हैं कि हज़रत जिब्राई रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुए कि सही राय यही है जिस का हज़रत हब्बाब बिन मुनज़र ने परामर्श दिया है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया हे हब्बाब तुम ने अक्ल का परामर्श दिया है। जंग बगर में खज़रज का झण्डा हज़रत हब्बाब बिन मुनज़र के पास था। हज़रत हब्बाब बिन मुनज़र की आयु 33 वर्ष थी जब जंग बदर में शहीद हुए।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 2 पृष्ठ 10 जंग बदर मुद्रित दारुल कुतुब अलइल्मिया बैरूत 1990 ई)

उनके बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने सीरते ख़ातमुन्नबिय्यीन में लिखा है कि

" जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने मुख़बिरों से लश्कर क़ुरैश के निकट आ जाने की रिपोर्ट प्राप्त हुई तो आपने एक सहाबी हबाब बिन मुनज़िर को रवाना किया कि वह जाकर दुश्मन की संख्या और शक्ति का पता लाएं और आप ने उन्हें ताकीद फ़रमाई कि अगर दुश्मन क ीशक्ति अधिक हो और मुसलमानों के लिए जोखिम की स्थिति हो तो फिर वापस आकर मज्लिस में उल्लेख न करना कि इतनी बड़ी संख्या है, बल्कि अलग सूचित करें ताकि इस से मुसलमानों में किसी भी तरह की निराशा न फैले। हब्बाब गुप्त रूप से चलो गए, और बहुत कम समय में आकर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सभी हालात वर्णन कर दिए।

(सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 484)

याहया बिन सअद से रिवायत है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ुरैज़ा के दिन और अलनज़ीर के दिन के अवसर पर जब लोगों से राय मांगी तो हज़रत हबाब बिन मुनज़िर खड़े हुए और कहा कि मेरी राय यह है कि हमें महलों के बीच पड़ाव करें। (अर्थात उनके निकटतम जाएं ताकि वहाँ की बातें भी जान सकें और निगरानी भी सही हो सकती है) तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी इस राय का पालन किया। हज़रत अमर के ख़िलाफत के युग में उन का निधन हुआ।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 427-428 हबाब बिन मुनज़िर मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1990 ई)

जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का देहान्त हुआ तब मुसलमानों की जो स्थिति थी उसे हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहो अन्हो ने जिस तरह नियंत्रण में लाए उसकी यह घटना है कि

"हज़रत अबूबकर ने अल्लाह की स्तुति वर्णन की और कहा कि देखो जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इबादत करता था सुन ले कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो निश्चय ही वफात पा गए और जो अल्लाह तआला की इबादत करता था तो उसे याद रहे कि अल्लाह ज़िन्दा है कभी नहीं मरेगा। हज़रत अबू बकर ने यह आयत पढ़ी اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ कि तुम भी मरने वाले हो और वे भी मरने वाले हैं। फिर उन्होंने यह आयत भी पढ़ी कि

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۔ اَفَائِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْئًا ۔ وَسَيَجْزِى اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ

(ऑल-इमरान: 145) कि मुहम्मद केवल एक रसूल हैं। आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से पहले सब रसूल फौत हो चुके हैं फिर क्या अगर आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) मर जाएं या कत्ल किए जाएं तो क्या तुम अपनी एड़ियों के बल फिर जाओगे और जो कोई अपनी एड़ियों के बल फिरे तो वह अल्लाह तआला को कभी नुकसान नहीं पहुंचा सकेगा और जल्द ही अल्लाह तआला धन्यवाद करने वालों को इनाम देगा।

सुलेमान कहते हैं कि यह सुन कर लोग इतनी रोए कि हिचकी बंध गई। सुलेमान कहते हैं कि और अंसार ने साद बिन अबादा के पास जमा हुए और कहा कि " एक अमीर हम में से हो और एक अमीर तुम में से हो। हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर इब्ने खत्ताब और हज़रत अबू उबैदह बिन जराह उनके पास गए। हज़रत उमर बोलने लगे तो हज़रत अबू बकर ने उन्हें चुप करा दिया। हज़रत उमर ने कहा कि अल्लाह तआला की कसम! मैंने जो बोलना चाहा था तो मैं ने इस प्रकार की तक़रीर तैय्यार की थी जो मुझे पसन्द आई थी और मुझे डर था कि हज़रत अबू बकर इस तक न पहुंच सकेंगे अर्थात इस प्रकार ने बोल सकेंगे फिर इस के बाद हज़रत अबू बकर ने तकरीर की और इस प्रकार की तकीरर जो बलाग़त में अन्य तकरीरों से बढ़ कर थी। उन्होंने अपनी तकरीर के मध्य में यह भी कहा कि हम अमीर हैं और तुम वज़ीर हो। हबाब बिन मुनज़र ने यह सुनकर कहा कि हरगिज़ नहीं। अल्लाह की कसम हरगिज़ नहीं अल्लाह की कसम हम इस प्रकार न करेंगे एक अमीर हम में से होगा और एक अमीर आप में से होगा अर्थात क़ुरैश में से भी हो और अंसार में से भी हो। अबू बकर रज़ि अल्लाह तआला अन्हो ने कहा नहीं अमीर हम में हैं और तुम वज़ीर हो क्योंकि यह क़ुरैश लोग वंश की दृष्टि से सारे अरब में उच्च हैं और अरब के पुरातन हैं इस लिए उमर या अबू उबैदह की बैअत कर लो। हज़रत अमर ने कहा नहीं बल्कि हम तो आप की बैअत करेंगे आप हमारे सरदार हैं और हम में सब से बेहतर हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हम से अधिक प्यारे हैं यह कह कर हज़रत अमर ने हज़रत अबूबकर का हाथ पकड़ा और उन की बैअत की और लोगों ने भी उन की बैअत की। उस समय सब ने फिर बैअत कर ली।

(सही अलबुख़ारी किताबुल फज़ाइल सहाबा नबी हदीस 3668)

हज़रत हबाब बिन मुनज़िर से रिवायत है कि हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और निवेदन किया कि इन दो बातों में से कौन सी आप को अधिक पसंद है? यह कि आप दुनिया में अपने सहाबा के साथ रहे या कि अपने रब्ब की तरफ उन वादों के साथ लौटें जो उसने ख़ुशी वाली जन्नतों में स्थायी रहने वाली नेअमतों का आप से वादा किया है और उसका भी वादा किया है कि जो आप को पसंदीदा हो और जिस से आप की आँखें

ठण्डी हों। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा से पूछा कि बताओ तुम क्या सलाह देते हैं? तो सहाबा ने अर्ज़ की कि हे अल्लाह के रसूल! हमें यह बात अधिक पसंद है कि आप हमारे साथ हों और हमें हमारे दुश्मनों की कमज़ोरियों से अवगत कराएं और अल्लाह तआला से दुआ करें ताकि वे उनके ख़िलाफ मदद करे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमें आसमानों की ख़बरों से अवगत करें। उस पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हबाब बिन मुनज़िर की ओर देखकर कहा कि तुम्हें क्या हुआ है कि तुम नहीं बोलते? बड़े चुप बैठे हो। कहते हैं मैंने उस पर निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल! जो अपने रब्ब ने आप के लिए पसंद किया है वह अपनाएं। अत: आप ने मेरी बात को पसंद फरमाया।

(अलमुसतदरक अला सहीहीन जिल्द 3, पृष्ठ 483 किताब मअरफतुस्सहाब: ज़िक्र मनाक़िब अलहबाब बिन अलमुनज़र हदीस 5803 मुद्रित दारुल कुतुब अलइल्मिया बैरूत 2002)

फिर एक सहाबी हैं हज़रत रफाह बिन राफे बिन मालिक बिन अजलान। यह भी अंसारी हैं। उनकी मृत्यु हज़रत अमीर मुआविया की अमीर होने के शुरुआती दिनों में हुई। हज़रत रफाह बिन राफे बिन मालिक बिन अजलान। उनका उपनाम अबू मुआज़ा है। माँ उम्मे मालिक सुपुत्री उबय्य बिन सलोल थीं जो अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलोल सरदार मुनाफकीन की बहन थीं। यह बैअत उक़बा में शरीक थे। जंग बदर और उहद और ख़ंदक और बैअत रिज़वान और सभी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे। आपके दो भाई थे ख़ल्लाद बिन राफे और मालिक बिन राफे। यह भी जंग बदर में शामिल थे।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 279 रफाह बिन राफे मुद्रित दारुल कुतुब अलइल्मिया बैरूत) (अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 447 रफाह बिन राफे मुद्रित दारुल कुतुब इलइल्मिया बैरूत 1990 ई)

हज़रत मुआज़ ने अपने पिता हज़रत रफाह बिन राफे से रिवायत की है और उनके पिता बदर के जंग में शामिल थे, उन्होंने कहा कि जिब्राईल नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और कहा आप मुसलमानों में बदर वालों को क्या स्थान देते हैं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा कि अच्छा मुस्लिम या ऐसा ही कोई कलमा कहा। हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने कहा और इसी तरह वह मलाइका भी सर्वोत्तम हैं जो जंगे बदर में शरीक हुए। यह बुख़ारी की रिवायत है।

(सही अलबुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी अध्याय हदीस 3992)

फरिश्ते कैसे जंग में शरिक हुए? हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन शाह साहिब ने बुखारी की जो व्याख्या लिखी है इसमें इन फरिश्तो के शरीक होने को लेकर जो वर्णन किया है वह इस तरह है कि

"अल्लाह तआला ने कुरान शरीफ में कहा कि

إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا سَأُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ

(अनफाल: 13) कि यह वह समय था जब तेरा रब्ब फरिश्तों को भी वह्यीकर रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। अत: मोमिनों को दृढ़ बनाओ। मैं काफिरों के दिलों में भय डालूंगा। अत: हे ईमान लाने वालो तुम उनकी गर्दन पर हमले करते जाओ और उनके पोर पोर पर हमला करो। ज़रबुल अुनाक और जरबुल रिकाब और ज़रबुल बनान से वे ज़ोरदार हमला है जिस में निशाना सहीह स्थान पर लगाने का इरादा हो। इससे मिलती जुलती दो तीन रिवायतएं हैं उनके बारे में शाह साहिब कहते हैं कि " इस अध्याय की रिवायतों में जो फरिश्तों का हाज़िर होने और देखे जाने का जो उल्लेख है वह से कश्फ की किस्मों में से है। (अर्थात कश्फ के रूप में है) और उनकी जंग भी इस प्रकार है जो उनके यथा योग्य है। (अर्थात जो फरिश्तों के उपयुक्त जंग होती है वह है) न तीर और तलवार की। (फरिश्तों ने कोई तीर और तलवार नहीं उठाई थीं।) और उनका अवलोकन आध्यात्मिक दृष्टि से होता है, न शारीरिक आँख से। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी निरीक्षण किया और सहाबा ने भी ऐसा ही देखा अल्लाह के औलिया भी इसी प्रकार देखते हैं। (कि फरिश्ते कैसे लड़ते हैं) फरिश्ते अल्लाह के ही अधिकार में थे (यह वर्णन शाह साहिब करते हैं) कि क़ुरैश के सरदार नख़ला की घटना से उत्तेजित हो कर अपने क्रोध में सीमा से बाहर हो गए और यही घटना बाद की जंगों का एक कारण बनी जिनमें क़ुरैश के सरदारों की मौत से संबंधित इलाही वादे पूरे हुए। फरिश्तों की तरीका हमारे तरीका से अलग और उन के जंग लड़ने की शैली हमारे जंग लड़ने की शैली से अलग है। बदर के स्थान पर दुश्मन का अकनकल (रेत का टीला) के उतार में पड़ाव करना (वे ऊंचाई पर थे) और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उतार घाटी में उतरना और सहाबा की कम संख्या का दुश्मन की नज़र से ओझल रहना, बारिश का होना। सहाबा का एक एक तीर अपने निशाने पर ठीक बैठना। (जो भी तीर सहाबा चलाते थे वह निशाने पर सही बैठता था। इसका सही बैठना।) और घातक साबित होना, दुश्मन का हैरान और सहाबा की सख्ती। (दुश्मन परेशान था और सहाबा बड़ी स्थिरता और सख्ती से लड़ रहे थे।) यह सब फरिश्तो कों का करिश्मा था जिसकी खबर अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इन शब्दों में दी थी कि

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُم بِأَلْفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ

(अनफाल: 10) कि और उस समय को भी याद करो जबकि तुम अपने रब्ब से दुआएं करते थे उस पर तुम्हारे रब्ब ने तुम्हारी तुम्हारी सुनी और कहा कि मैं तुम्हारी मदद हज़ारों फरिश्तों से करूंगा जिनका लश्कर के बाद लश्कर बढ़ रहा होगा।"

फिर लिखते हैं कि "नबी का दुआ की स्वीकृति से जो ज़हारी बातों में प्रभाव पड़ा उसके अंदर एक अजीब निरंतरता दिखाई देती है। इस के हिस्सों पर एक साथ दृष्ट डालने से फरिश्तों की विशाल सेना काम करती नज़र आती है। (आप बताते हैं कि) किसने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नाजुक घड़ी में सुरक्षित मक्का से निकाला और किस ने मक्का वालों को लापरवाह रखा और फिर किस ने उन्हें सौर गुफा तक लाकर आप के पीछे से क़ुरैश को निराश लौटा दिया किस ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सुरक्षित रूप से मदीना पहुंचाया जो इस्लाम के विकास का मुख्य केंद्र बिन गया। "

फिर लिखते हैं कि "हज़रत अब्बास का हिजरत के बाद मक्का में शिर्क की अवस्था में रहना और फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हार्दिक सहानुभूति रखना और आप को मदीना में मक्का के क़ुरैश बुरे इरादों और योजनाओं से अवगत करते रहना (अर्थात हज़रत अब्बास द्वारा)। यह भी फरिश्तों के कार्य का ही एक हिस्सा है। "(ये फरिश्ते इस तरह काम करते हैं) इन सभी घटनाओं के पीछे फरिश्तों की तहरीक ही काम कर रही थी। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जंगों और जीतों और विजयों की पीछे ईमान वर्धक आयत

أَنِّي مُمِدُّكُم بِأَلْفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ

(अनफाल: 10) की तफसीर प्रस्तुत करता है।

फिर शाह साहिब और कहते हैं कि

"मैंने सही बुख़ारी पूरी हज़रत ख़लीफतुल मसीह हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहिब रज़ि अल्लाह से सबक सबक पढ़ी है और इसी तरह कुरआन भी कई बार पाठ के रूप में सुना और पढ़ा है। आप (अर्थात हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल) फरिश्तों के संबंध में कहा करते थे कि नुरुद्दीन को भी फरिश्तों से बातें करने का मौका मिला है और अल्लाह का निज़ाम बहुत व्यापक प्रणाली है। मनुष्यों की शक्तियों और हर शक्ति के लिए भी फरिश्ते निर्दिष्ट हैं। देखने की शक्ति और सुनने की शक्ति, और छूने तथा पकड़ने की शक्ति और बुद्धि और चेतना और चिन्तन तथा सोचने की शक्तियों के साथ अगर फरिश्तों की मदद और सहायता न हो तो यह शक्तियां बेकार बल्कि हानिकारक हो जाती हैं। " (सारी मानवीय शक्तियां जो हैं वे फरिश्तों की वजह से ही उपयोगी होती हैं।) फिर लिखते हैं कि "तीर या गोली का निशाना सटीक उसी समय अपने लक्ष्य पर लग सकता है जब बुद्धि और चेतना अपने ठिकाने पर हो और दूरी और निकटता का सही ज्ञान ो। हालत ठीक हो। मन की शक्तयिां ठीक हों अन्यथा तीर विफल जाएगा। " लिखते हैं कि (ख़लीफा अव्वल) " कहा करते थे कि एक एक मानसिक और शारीरिक शक्ति के साथ फरिश्ते निर्धारित हैं और उनका संबंध हर इंसान की हर ताकत में कुफ्र तथा ईमान की अवस्था में अलग होता है। कुरआन मजीद ने इन की संख्या जंग बदर में तीन हज़ार और जंग उहद में पांच हज़ार का उल्लेख किया है। यह अंतर अवसर और स्थान के अंतर और महत्त्व के बीच अंतर के कारण है। जंगे बदर में दुश्मनों की संख्या कम और जंगे उहद में अधिक और इसी तुलना से खतरा भी अधिक और फरिश्तों की रक्षा भी अधिक संख्या में नाज़िल किए जाने का वादा है। फरमाता है,

وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِندِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ

(आले इम्रान 127) कि वादा दी गई सहायता का प्रकट होना अल्लाह तआला के गुण अज़ीज़ तथा हकीम के अन्तर्गत है। ये दोनों विशेषताएं उत्तम चेष्टा, और, पूर्ण वर्चस्व और प्रभावशाली होने को चाहती हैं, जिसमें सहायता के सभी माध्यम एक दूसरे से परस्पर जुड़े हुए हैं। इन में निरन्तरता पाई जाती है और अल्लाह तआला की मज़बूद दलीलों से दृढ़ किए जाते हैं।

(उद्धरित सही अल-बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब शहूदुल मलाईक बदर जिल्द

8 पृष्ठ 71 से 73 नज़ारत इशाअत रब्वा)

तो यह है वह सारी इस ज्ञान की गहराई जो फरिश्तों के जंग करने के बारे में अल्लाह तआला ने फरमाया था कि फरिश्ते भेजे थे जो जंग लड़ रहे थे न यह कि फरिश्ते ख़ुद मार रहे थे और कुछ के निकट तो यह भी रिवायत में है कि फरिश्तों ने जिन को मारा और घाव लगाए उन की पहचान बिल्कुल अलग थी और जो सहाबा के माध्यम से लोगों को घाव पंहुच रहे थे उन की पहचान अलग थी।

(फत्हुल बारी व्याख्या सही अल-बुख़ारी जिल्द 7 पृष्ठ 312 हदीस 3992 मुद्रित कदीमी कुतब ख़ाना आराम बाग़ कराची)

यह ग़लत बात है। तथ्य यह है कि फरिश्ते मानवीय शक्तियों को सही तरीके से मार्गदर्शन करते हैं और इन का सही तरीके से उपयोग करते हैं और जब ये फरिश्तों के माध्यम से हो रहा होता है तो वही फरिश्तों को लड़ना होता है।

हज़रत यह्या ने मुअज़्ज़ा बिन राफअ से रिवायत की है हज़रत रफाए बदर वालों में से थे और उनके पिता हज़रत राफे अक़बा में बैअत करने वालों में से एक थे। हज़रत राफे अपने बेटे रिफाए से कहा करते थे कि मुझे यह बात ख़ुश न करती कि बजाय बदर में शरीक होने के मैं उकबा में शामिल होता अर्थात यह बात मेरे लिए बहुत बड़ी बात है मेरे लिए यह अधिक सम्मान योग्य है कि मैं जंगे बदर में शामिल हुआ इस की तुलना में कि मैंने बैअत उक़बा में बैअत की।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल मुग़ाज़ी बाब शहूद मलाईका बदर हदीस 3993)

एक बहुत बड़ा सम्मान मुझे जंगे बदर में शामिल हो कर मिला। हज़रत रिफाए बिन राफे जंगं जमल में और सफ्फैन में हज़रत अली रज़ि अल्लाह के साथ थे। एक रिवायत के अनुसार हज़रत तलहा और हज़रत ज़ुबैर बसरा की तरफ लश्कर के साथ निकले तो हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब की पत्नी उम्मे फज़्ल सुपुत्री हारिस ने हज़रत अली को उनके निकलने की सूचना दी। इस पर, हज़रत अली ने कहा कि आश्चर्य से कहा कि लोगों ने हज़रत उस्मान को हमला कर के उन्हें शहीद कर दिया, और बिना किसी ज़बरदस्ती के मेरी बैअत की। मैंने ज़बरदस्ती तो नहीं कहा था कि मेरी बैअत करो। लोगों ने मेरी बैअत की और तल्हा और ज़ुबैर ने भी मेरी बैअत की और अब वह लश्कर के साथ इराक की तरफ निकल पड़े हैं। इस पर हज़रत रफाह बिन राफे ने कहा कि जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का देहान्त हुआ तो हम लोग अर्थात अंसार इस ख़िलाफत के अधिक हकदार हैं क्योंकि हम ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मदद की और हमारा स्थान धर्म में बड़ा है, लेकिन आप लोगों ने कहा कि हम मुहाजिर सर्वप्रथम हैं और हम आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दोस्त और क़रीबी हैं और हम तुम्हें अल्लाह तआला की याद दिलाते हैं कि तुम आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उत्तराधिकार में हम से विरोध न करो और तुम अच्छी तरह जानते हैं कि हमने उस समय आपको और ख़लीफा की बात को छोड़ा था। (हम ने फिर चर्चा नहीं की और बिल्कुल सही आज्ञाकारिता के साथ ख़िलाफत की बैअत कर ली।) और उसकी वजह यह थी कि जब हमने देखा कि हक का का पालन हो रहा है और अल्लाह की किताब का पालन किया जा रहा है और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत स्थापित है तो हमारे पास प्रसन्न होने के अलावा कोई और चारा ही नहीं था और उसके अतिरिक्त हमें क्या चाहिए था और हम ने आप की बैअत की और फिर उल्लेख नहीं किया। (फिर पीछे नहीं हटे।) अब आप से उन लोगों ने विरोध किया है जिन से आप बेहतर हैं और अधिक पसंदीदा हैं। तो आप हमें अपने आदेश से बताएं। इस बीच, हज्जाज बिन ग़ज़या अंसारी आए और कहा, हे अमीरुल मोमेनीन! इस मामला को इस से पहले ठीक करना चाहिए कि समय हाथ से निकल जाए। मेरी जान के कभी चैन नसीब न होगा अगर में मृत्यु का भय करूं। हे अंसार के गिरोह अमीरुल मोमिनीन की दूसरी बार सहायता करो। जिस प्रकार तुम ने पहले अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मदद की थी। अल्लाह की कसम! यह दूसरी सहायता पहली सहायता की तरह होगी सिवाय इस के कि इन दोनों में से पहली मदद बेहतर है।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 2 पृष्ठ 280-281 रिफाअ बिन राफे मुद्रित दारुल कुतुब अलइल्मिया बैरूत)

बहरहाल उनकी मृत्यु हज़रत अमीर मुआविया के ज़माना के शुरुआती दिनों में हुई।

(अल्इस्तियाब जिल्द 2 पृष्ठ 497 रिफाअ बिन राफे मुद्रित दारुल हैल बैरूत 1992 ई)

अत: यह था सहाबा का उल्लेख। मैं पिछले ख़ुत्बा की घटनाओं के बारे में भी बात करना चाहता हूं। एक घटना की व्याख्या करना चाहता हूँ कि मैंने हज़रत अम्मार के बारे में बताया था कि हज़रत अम्रो बिन आस ने उनकी मृत्यु पर बड़े खेद और चिंता व्यक्त की थी कि उन्होंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कहते सुना था कि अम्मार बिन यासिर को विद्रोही समूह कत्ल करेगा और हज़रत अम्रो बिन आस को चिंता इसलिए थी कि वह अमीर मुआविया की तरफ थे और हज़रत अम्मार को शहीद करने वाले हज़रत अमीर मुआविया के सैनिक थे।

(अल-मुस्तदरक अली सहीहैन जिल्द 3, पृष्ठ 474 किताब मअरफतुस्सहाबा ज़िक्र मनाक़िब अम्मार बिन यासिर हदीस 5726 मुद्रित दारुल हरमैन लित्तबाअत वन्नशर 1997 ई)

बहरहाल इस बात पर कुछ लोग सवाल करते हैं कि जब यह विद्रोही समूह था तो फिर उनका नाम इतने सम्मान से क्यों लिया जाता है और हज़रत अमीर मुआविया को भी जमाअत के साहित्य में भी एक स्थान है। पहली बात यह है कि सहाबा की जो स्थिति है हमारा काम नहीं है कि हम कहेंगे कि यह क्षमा किया जाएगा और इसे क्षमा नहीं किया जाएगा। जिस भी ग़लती या त्रुटि के कारण यह घटना हुई इस का मामला ख़ुदा तआला के हाथ में है। इस का बदला मुसलमानों ने भी भुगता। यह सवाल उन लोगों के मन में भी उठते थे जो उस ज़माने में थे और फिर वे अपनी चिंता को दूर करने के लिए दुआ भी करते होंगे कि यह क्या हो गया कि यह भी सहाबी और वह भी सहाबी और एक दूसरे के ख़िलाफ लड़ रहे हैं और अल्लाह तआला से मार्गदर्शन भी मांगते होंगे और अल्लाह तआला उन का मार्गदर्शन भी करता था)।

इसलिए एक रिवायत है अबू ज़ुहा से मरवी है कि अम्रो बिन शरजील अबू मेसर ने (जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद के शागिर्दों में से थे) सपना में देखा कि एक हरा भरा उद्यान है जिसमें कुछ टेंट लगे हैं। उन में अम्मार बिन यासीर थे और वहां कुछ तंबू थे जिनमें ज़ुल कला थे। तो अबू मेसर ने पूछा कि यह कैसे हो गया कि इन लोगों ने तो आपस लड़ाई लड़ी थी। जवाब मिला कि इन लोगों ने अल्लाह तआला को वासेउल मग़फिरत अर्थात बहुत अधिक क्षमा करने वाला पाया है इसलिए अब वहां इकट्ठे हो गए हैं।

(अस्सुनन अल्-कुबरा लिल्बहीकी जिल्द 8 पृष्ठ 302 हदीस 16720 मुद्रित दारुल कुतुब अल-इल्मिया बैरूत 2003 ई)

तो यह मामले अब अल्लाह तआला के सुपुर्द हैं। इन मामलों और मतभेदों को हमारा काम नहीं कि दिल में जगह दें। इन मामलों को दिल में रखने की वजह से और जंग की वजह से ही मुसलमानों के दिलों में दूरी बढ़ती चली गई और मुसलमानों में और अधिक फूट पैदा होता चला गया और उसका परिणाम हम आज भी देख रहे हैं। ये बातें हमारे लिए भी शिक्षा हैं कि इन बातों को दिलों में लाने के स्थान पर एकता पर स्थापित हों। जब एक बार मैंने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो के हवाले से अमीर मुआविया की कोई घटना वर्णन की थी तो किसी ने मुझे अरब देशों में यह लिखा कि वह तो विद्रोही और ख़ूनी गिरोह था और उसका सरदार था। उसका नाम आप इतने सम्मान से क्यों लेते हो उनके लिए भी यह जो सपने वाली रिवायत है यह पर्याप्त जवाब है कि अल्लाह तआला की क्षमा और दया व्यापक है। हमें अपने मामलों को संभालना चाहिए और अब हमें उनके बारे में सोचने के बजाय अपने सुधार के बारे में कोशिश करनी चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालान ने कुछ स्थानों पर अमीर माविया के बारे में प्रशंसा की है।

(उद्धरित मलाइकतुल्लाह, अनवारुल उलूम जिल्द 5 पृष्ठ 552)

इसलिए हमें भी इन बुज़ुर्गों की त्रुटियों पर कुछ कहने की बजाय उनसे सबक लेना चाहिए। हज़रत अमीर मुआविया के बारे में एक जगह यह भी आता है कि जब हज़रत अली और उनकी लड़ाई हो रही थी और मतभेद बड़े व्यापक हो रहे थे तो उस समय, ईसाई राजा ने कहा कि यदि मुस्लिमों की स्थिति अब कमजोर है तो हमला करना चाहा। जब अमीर मुआाविया ने यह सुना, तो उसने कहा यदि तुम्हारी यह सोच है, तो याद रखो कि यदि तुम हमला करते हो, तो हज़रत अली के झंडे के नीचे लड़ने वाला पहला सब से पहला जर्नल मैं होऊंगा जो उन के झण्डे के नीचे उन की तरफ से तुम्हारे खिलाफ लड़ूंगा।

(उद्धरित तफसीर कबीर जिल्द 4 पृष्ठ 430)

अत: होश से काम। अत: बहरहाल उन लोगों का यह स्थान था।

अल्लाह तआला हमें शक्ति प्रदान करे कि हम हमेशा एक रहें और एकता पर स्थापित रहें और अच्छे कर्मों में वृद्धि करने वाले हों।

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

* एक बच्ची ने सवाल किया कि दोपट्टा किस आयु से स्कूल में ले जाना चाहिए?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: 12 साल से पहले परन्तु लिबास उचित और शर्म वाला होना चाहिए।

* एक बच्ची ने सवाल किया कि जब आप छोटे थे तो आप किस तरह की शरारतें करते थे?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : स्पष्ट है कि करता हूंगा अब मुझे याद नहीं। मैं प्राय शांति करवाता था।

* एक बच्ची ने पूछा कि जब आप छोटे थे तो मां का कहना मानते थे सहायता करते थे?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : हर आदेश मानता था बाज़ार से सौदा भी लाकर देता था।

इस सवाल के जवाब में कि आपको कौन सा रंग पसंद है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : कभी सोचा नहीं सब रंग ठीक हैं।

* एक बच्ची ने सवाल किया कि जब आपके पास खाली समय होता है, तो क्या आप खाना पकाते हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : पहले पका लेता था परन्तु अब समय नहीं है।

* उस प्रश्न के जवाब में के आप का पसंदीदा फूल कौन सा है?

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि गुलाब का फूल।

* इस प्रश्न के जवाब में आपका पसंदीदा पकवान कौन सा है?

हुज़ूर अनवर ने फरमाया : हर स्वादिष्ट पकाया हुआ खाना अच्छा लगता है वैसे समुन्द्री खाने अच्छे लगते हैं।

* एक बच्ची ने सवाल किया कि आपका पसंदीदा खेल कौन सी है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यही सवाल लड़कों ने यही किया है। बचपन में, जवानी में क्रिकेट खेलता था।

*** एक बच्ची ने पूछा कि क्यों यूरोपीय लोग इस्लाम से नफरत करते हैं और क्यों ख़ुदा तआला को स्वीकार नहीं करते?**

इसके जवाब में, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: कई मुस्लमानों ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वीकार नहीं किया। उन लोगों के पास सही इस्लामी शिक्षा नहीं है। मुसलमान इस्लाम को सच्ची और वास्तविक शिक्षा को ग़लत रूप से प्रस्तुत करते हैं। इस्लाम कहता है कि दुश्मन से भी अन्याय न करो। इस्लाम न्याय की शिक्षा देता है। जब के मुस्लिम न्याय नहीं करते। इस्लाम सरकार के कानून की पाबन्दी का कहता है, लेकिन आम तौर पर मुस्लिम पाबन्दी नहीं करते। इसी प्रकार कई इस्लामी शिक्षाओं पर अनुकरण नहीं करते, लड़ाइयां करते हैं। मुस्लिम सरकारें अपने लोगों की हत्या कर रही हैं। लोग सरकार के ख़िलाफ विद्रोह कर रहे हैं, विद्रोह पैदा हो रहा है। जब यूरोप के लोग उन्हें देखते हैं, तो वे समझना शुरू करते हैं कि इस्लाम इस प्रकार का ही धर्म है। कुछ लोग उग्रपंथी होते हैं और मारधाड़ करते हैं, लेकिन जब हम उन्हें बताते हैं कि यह इस्लाम नहीं है, इस्लाम शांतिपूर्ण और शांति, प्रेम का धर्म, इस्लाम के अर्थ ही शान्ति के हैं, इसलिए हम इसे चरमपंथी नहीं कह सकते।

मैं विभिन्न स्थानों और सम्मेलनों में बताता हूं कि इस्लाम यह है ताकि लोग कहें कि यह इस्लाम बहुत आदरणीय है। इसी तरह, जब हम लीफ लेटस को बांटते हैं, तो लोगों को सही इस्लाम का पता मिलता है। लोग कहते हैं कि हमें इस तरह का इस्लाम पसंद है। यदि आप एम.टी.ए देखो तो इस में विभिन्न कार्यक्रम आते हैं, यूरोपीय लोग व्यक्त करते हैं कि जो इस्लाम जमाअत अहमदिया प्रस्तुत करती है यह तो बहुत अच्छा इस्लाम है इसलिए इस्लाम वह है जो अहमदी बताते हैं।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी यह भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि मुसलमान एक समय में बिगड़ जाएंगे और मूल शिक्षा भूल जाएंगे, तब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आएंगे और इस्लाम की सही शिक्षा बताएंगे, तुम अहमदी हो, लोगों को बताओ कि जो इस्लाम तुम अन्य मुसलमानों में देखते हो वह सही इस्लाम नहीं है, बल्कि इस्लाम जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लाए हैं और पवित्र कुरआन ने हमें बताया है वह शांति और प्रेम का इस्लाम है, और हम अहमदी लोग इस का पालन करते हैं।

*** एक बच्ची ने सवाल किया कि अहमदी और ग़ैर-अहमदी के बीच क्या अंतर है।**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अहमदी और ग़ैर अहमदी में यह अंतर है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यही भविष्यवाणी फरमाई थी और सूर: जुम्अ: में भी इसका उल्लेख है कि अंतिम समय में मसीह मौऊद आएंगे। ग़ैर अहमदी भी मानते हैं कि मसीह मौऊद और महदी मअहूद आएंगे लेकिन वह कहते हैं मसीह आसमान से उतरेंगे, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जीवित आसमान पर बैठे हैं और फिर दोबारा आएँगे। जबकि हम कहते हैं कि कोई भी मनुष्य हमेशा के लिए नहीं ज़िन्दा हो सकता है। अगर किसी को जीना पड़ा, तो वह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं। जब आप ज़िंदा नहीं रहे तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम किस प्रकार जीवित रहे सकते हैं? हम दूसरे मुसलमानों को कहते हैं कि तुम ग़लत समझे हो किसी ने आसमान से नहीं उतरना और न महदी के साथ मुसलमानों को निर्देश देना है और ईसाइयों को कत्ल करना है बल्कि मसीह और महदी एक ही अस्तित्व हैं और उसी महदी और मसीह ने मुसलमानों को हिदायत देने ही। और ईसाइयों को कत्ल करना है। और दलील से दूसरे लोगों के आरोपों का रद्द करना है लोगों को बताना है कि मूल शिक्षा क्या है और सब लोगों को एक हाथ पर इकट्ठा करना है।

हम मानते हैं कि मसीह और महदी ने आना था वह उम्मत में ही आएगा। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी बुख़ारी में इस उम्मत में आने के बारे में ख़ुशख़बरी दी है। इसलिए जो आने वाला था वह आ गया है। और मसीह मौऊद हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब अलैहिस्सलाम हैं। हम उन्हें आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार मानते हैं जबकि ग़ैर अहमदी कहते हैं कि वह अब नहीं आया। उसने आक़ाश से ही आना है।

मसीह के आगमन की जो निशानियां दी गई थीं वे भी पूरी हो चुकी हैं। जिन में नई सवारियों के आने का भी उल्लेख है। ट्रेनें होंगी, जहाज़ होंगे, फिर सूर्य और चंद्रमा का रमज़ान के महीने में निर्धारित तिथियों में ग्रहण लगने की निशानी भी थी, वह भी पूरी हो गई है। इसलिए, हमारे पास तो दलील है कुरआन तथा आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार, वह आ गया है। हमने इसे स्वीकार कर लिया है। अब किसी और ने नहीं आना है। अन्य मुस्लिम कहते हैं कि उस ने आकाश से आना था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि आप लोग अन्य निशानों तथा दलीलों को भी याद कर लें।

*** एक बच्ची ने पूछ आपकी दैनिक दिनचर्या क्या है?**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : मैंने आपको कई बार बताया है। फिर बता देता हूं। सुबह नफलों के लिए उठता हूँ जिसके बाद थोड़ा कुरआन पढ़ लेता हूँ, सुन्नतें पढ़ता हूँ, फिर नमाज़ पढ़ाने के लिए चला जाता हूं, वापस आकर थोड़ी सी कसरत करता हूँ। फिर वापस आकर थोड़े सा कुरआन की तफसरी पढ़ लेता हूं। फिर बाहर से आई हुई डाक देख लेता हूं उठ कर नाश्ता कर लेता हूं और फिर कार्यालय चला जाता हूं। विभिन्न कार्यालयों और कमेटियों के लोग मुलाकात के लिए आ जाते हैं, इसी तरह कई देशों के अमीर मुलाकात के लिए आ जाते हैं दो या तीन घंटे इस तरह से गुज़र जाते हैं।

तब मैं ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाने के लिए जाता हूं। फिर मैं घर आकर खाना खाता हूं, थोड़ा आराम करता हूं, फिर मैं उठता हूं और कार्यालय जाता हूं। दफ्तर की डाक और विभिन्न मिश्नों की डाक देखता हूं। शाम को चाय पी कर नमाज़ असर के लिए जाता हूं फिर लोग मुलाकात के लिए आ जाते हैं जिस में डेढ़ दो घण्टे लग जाते हैं फिर मैं बाहर से आई हुई डाक देखता हूं। फिर रात का खाना खाता हूं और नमाज़ इशा पढ़ने के लिए जाता हूं। कोई रिश्तेदार मिलने के लिए आया तो पांच सात मिनट उनसे मिलता हूँ। फिर कार्यालय में जा कर डाक देखता हूँ। फिर रात हो जाती है। ग्यारह साढ़े ग्यारह हो गए तो कुछ किताब पढ़ ली, अख़बार आदि देख ली, फिर थोड़ा सोया और वही रोटेशन शुरू होता है। साथ ही कई लोग के बहुत सारे पत्र भी आते हैं, वे भी देखता हूं। सप्ताह में सात आठ हज़ार पत्र हो जाते हैं, जिन पत्रों का सार बनकर आता है और 6, 7 हज़ार ख़त बन जाते हैं तुम लोग भी ख़त लिखा करो।

* हुज़ूर अनवर ने बच्चियों से पूछा क्या कभी पत्र लिखते हो? मेरा हस्ताक्षर से उत्तर आता है या प्राइवेट सैक्रेटरी के हस्ताक्षर से। फिर पूछा क्या देखते हो कि उत्तर किस के हस्ताक्षर से आया है। तुम्हारे पत्र का जवाब मिला है, उस पर बच्चियों ने उत्तर दिया हमें हुज़ूर अनवर से जवाब मिलता है उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया बस ऐसे दिन गुज़रता है।

*** एक बच्ची ने पूछा कि हुज़ूर ख़लीफा बनने से पहले कहीं काम करते थे।**

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: में तो वक्फे ज़िन्दगी था, केन्द्र में जमाअत के ही काम करता था, ख़लीफा बनने से पहले सदर अंजुमन में जो हमारे केंद्रीय कार्यालय हैं, वहाँ नाज़िर आला था, इससे पहले नाज़िर शिक्षा भी रहा हूं। शिक्षा की जितना समस्याएं थीं उन्हें हल करना होता था। इससे पहले तहरीक जदीद वकालत मॉल में था और इससे से पहले घाना में था स्कूल में भी रहा हूँ, और परियोजना भी चलाता रहा हूं। मैं वक्फे ज़िन्दगी था पहले दिन से अंतिम दिन तक जमाअत का ही काम किया है। जो वक्फ हैं उन्हें यह भी याद रखना चाहिए कि उन्हें जितना संभव हो उतना काम करना चाहिए।

*** एक और बच्चे ने पूछा कि हज जीवन में एक बार क्यों फर्ज़ है।**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : यह हर किसी के लिए अनिवार्य नहीं है। जो लोग यात्रा कर रहे हैं हज यात्रा करने के खर्च बर्दाश्त कर सकते हों, जिन को सफर की सुविधा हो किसी प्रकार का खतरा न हो तो उन पर हज फर्ज़ है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में फतेह मक्का से पहले दिक्कतें थीं खतरा था, आप हज न कर सके थे। मक्का में भी नहीं जा सके थे। हुज़ूर अनवर ने फरमाया: यदि सभी सुविधाएं उपलब्ध हों तो जीवन में एक बार हज कर लेना पर्याप्त है। लेकिन हज केवल उन पर फर्ज़ है जिन्हें हर प्रकार की सुविधाएं मिलती हैं, किराए के पैसे भी हों, रास्ते में कोई जोखिम न हो, तो तुम हज कर लो, यह अच्छा है, लेकिन अगर आप रास्ते में रुकावटे हैं तो फिर हज न करो। कोई बात नहीं।

*** एक बच्ची ने सवाल किया कि आप कितनी भाषाएं जानते हैं?**

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : कोई भी नहीं आता। अच्छा तरह केवल उर्दू आती है और कुछ अंग्रेजी आती है। अरबी को भी थोड़ा समझ जाता हूं।

*** एक बच्ची ने पूछ है कि आपका पसंदीदा जानवर कौन सा है?**

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : सारे जानवर ही अच्छे होते है। हुज़ूर अनवर ने पूछा कि तुम्हें कौन सा जानवर पसंद है। क्या तुम ने घर में कोई जानवर रखा हुआ है? बच्ची ने जवाब दिया कि उसे छोटा कुत्ता पसंद है। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि अगर शिकार के लिए रखना है तो ठीक है, इसी तरह रक्षा के लिए रखना है तो ठीक है अन्यथा शौक के लिए कोई ज़रूरत नहीं।

*एक बच्ची ने अर्ज़ किया कि हुज़ीर ने फरमाया था कि चेहरे रपेंट नहीं करने। इसलिए हम अहमदी बच्चे नहीं करते।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: बहुत अच्छी बात है।

एक बच्ची ने हुज़ूर से पूछा आपने कहा कि नमाज़ बहुत महत्त्वपूर्ण है, मैं भी नमाज़ पढ़ती हूं।

उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया : माशाअल्लाह।

* एक बच्ची ने अर्ज़ किया हुज़ूर ने ख़ुत्बा में बताया था कि बच्चों को प्यारी प्यारी कहानियाँ सुनानी चाहिए, मेरी अम्मी मुझे नबियों और सहाबा की कहानियाँ सुनाती हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : माशा अल्लाह ।

* एक बच्ची ने बताया कि पिछले साल जब आप जलसा जर्मनी पर आए थे तो आप ने बच्चों की तरफ आकर हाथ हिलाया, जिस पर मुझे आंसू आ गए थे।

इस पर हुज़ूर ने फरमाया कि बैठ जाओ कहीं दोबारा आंसू न आ जाएं

* एक बच्ची ने कहा प्यारे हुज़ूर! नासरात बहुत खुश हैं कि आप डेनमार्क तशरीफ लाए हैं।

* एक बच्ची ने बताया कि वह पांच साल की थी। तो वह कादियान गई थी अब वह नौ साल की है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, "अब कादियान बहुत कुछ बदल दिया है। चार साल में बहुत बदल गया है, इसलिए फिर से वापस ज़रूर जाओ।

* एक बच्ची ने कहा कि उस के कमरे में हुज़ूर अनवर की एक तस्वीर है जिसे वह देखती रहती है।

उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने हिदायत देते हुए कहा कि जब नमाज़ पढ़ो तो तस्वीर सामने नहीं होनी चाहिए बल्कि पीछे होना चाहिए।

नासरात की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ यह कलास 8 बजकर 45 मिनट तक चली।

आमीन समारोह

इस के बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ मस्जिद पधारे। कार्यक्रम के अनुसार आमीन समारोह का आयोजन हुआ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने निम्न दस बच्चों और बच्चियों से कुरआन की एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई।

प्रिय फ़राज़ अहमद, रामीन चीमा, प्रिय फारस अहमद, प्रिया श्माइलह काफी खान, प्रिया मलीहह वक़ास, प्रिया आयशा मुजफ्फर, प्रिया तज़य्यन महमूद, प्रिया मलाइका कुदूस, प्रिया माहे नूर कद्दूस, प्रिया माहीन शहजाद

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब व इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

9 /मई 2016 (दिनांक सोमवार)

सुबह सवा चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद नुसरत जहां पधार कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, ख़त और रिपोर्ट देखे और निर्देश दिए। हुज़ूर अनवर दफ़्तरी मामलों में व्यस्त थे। कार्यक्रम के अनुसार सवा एक बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय आए। आदरणीया मुनीरा करो साहिबा पत्नी कमाल करो साहिब मरहूम ने हुज़ूर अनवर से दफतरी मुलाकात की सआदत हासिल की। आदरणीया डेनिश कुरआन के अनुवाद को पुन: देखने चैकिंग का काम कर रही हैं। आप ने अपने काम के बारे में विभिन्न मामलों में हुज़ूर अनवर से मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

यह मुलाकात क़रीब 25 मिनट तक चली।

बाद में आदरणीय मुहम्मद ज़कारिया ख़ान अमीर मुबल्लिग़ इन्चार्ज डेनमार्क ने सरकारी मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने विभिन्न मामले में मार्ग दर्शन दिया।

दो बज कर दस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद नुसरत जहां पधार कर नमाज़ जुहर व अस्र जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

होटल हिल्टन में रिसेप्शन:

आज जमाअत अहमदिया डेनमार्क ने HILTON होटल में एक स्वागत समारोह का आयोजन किया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ इस आयोजन में शामिल होने के लिए साढ़े पांच बजे अपने निवास से होटल के लिए गए। यह होटल कोपेनहेगन हवाई अड्डे के सामने स्थित है।

मंत्रियों सांसदों से मुलाकात

5 बजकर 55 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ इस होटल में तशरीफ़ लाए। कार्यक्रम के अनुसार समारोह की शुरुआत से पहले कुछ मेहमान का हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का कार्यक्रम था।

इन मेहमानों में माननीय ULLA SANDBAEK साहिब सांसद, सम्मान्नीय IAN MESSMANN सांसद, सम्मान्नीय JOSEPHINE FOCK सांसद, ऐम्बसडर आफ बेलजियम POL DE WITTE और मिनिस्टर फॉर

कल्चरल अफेयर्स एंड मिनिस्टर फॉर ECCLESIASTICAL अफेयर्स H. E. MR बर्टेल हैदरशामिल थे और ये सभी मेहमान सम्मेलन कक्ष में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ होटल में पधारने के बाद सम्मेलन कक्ष में पधारे। मेहमानों से परिचय प्राप्त किया।

एक सांसद ने अर्ज़ किया कि एक तो मैं हुज़ूर अनवर की सेवा में अनुरोध करना चाहती हूँ और यह निवेदन करना चाहती हूं कि डेनिश लोग इस्लाम के विषय में जानना चाहते हैं। उन्हें वास्तविक इस्लाम का पता नहीं। मैं चाहती हूं कि आप वीडियो पर कोई संदेश दें।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया: इस्लाम का मतलब शांति है। जो लोग शांति के ख़िलाफ हैं वे इस्लाम के मानने वाले नहीं हैं। वे चरमपंथी हैं, उन का इस्लाम से संबंध नहीं हैं। वे इस्लाम की शिक्षा के ख़िलाफ कर रहे हैं। हज़रत अक़दस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब संस्थापक जमाअत अहमदिया ने इस्लाम की जो वास्तविक तस्वीर हम तक पहुंचाई हैं वे आप ने पवित्र कुरआन और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ही सीखी हैं। मैं इसी इस्लाम को जानता हूं जो शांति वाला, सुरक्षा और प्रेम वाला इस्लाम है।

संसद ने सवाल किया कि कुछ लोग कहते हैं कि इस्लाम में धर्म परिवर्तन की सज़ा है इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इस प्रकार नहीं है। कुरआन में है कि "ला इकराहा-फिद्दीन" धर्म में कोई ज़बरदस्ती नहीं। हर इंसान धर्म धारण करने और धर्म छोड़ने में स्वतंत्र है। कुरआन में धर्म छोड़ने की कोई सज़ा नहीं है। धर्म को छोड़ने वाले को मारना, यह इस्लाम के ख़िलाफ बिल्कुल है। इस्लाम शांति, सुरक्षा, सहिष्णुता और प्रेम का धर्म है। मुहब्बत तथा प्यार का धर्म है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया : मानवीय मूल्य मेरे लिए सबसे महत्त्वपूर्ण हैं। अन्य वस्तुओं पर मानवीय मूल्यों को प्राथमिकता देनी चाहिए और एक-दूसरे के साथ धर्म क़ौम रंग नस्ल के भेद के बिना प्रेम से व्यवहार करना चाहिए। और एक-दूसरे के अधिकारों का ध्यान रखना चाहिए।

इस पर, सांसद ने कहा कि आपका संदेश एक बहुत ही प्यारा संदेश है जिसे मैं दुनिया भर में फैलाना चाहती हूं। मुझे पता था कि सहीह और सच्चा इस्लाम यही होगा जो हुज़ूर अनवर ने वर्णन किया है।

एक सवाल के जवाब में,हुज़ूर अनवर ने फरमाया: मैं यहां लंदन से 4 मई को यहां आया हूं। यहां मौसम गर्म है जब जाऊंगा तो फिर नार्मल हो जाएगा वरना यहां प्राय तापमान 14 डिग्री रहता है।

एक सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हमारा जो माटो है मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं। यह इस्लामी शिक्षा के अनुसार है।

एक दूसरे सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "हुब्बुल वत्नो मिनल ईमान" अर्थात देश से मुहब्बत हमारे ईमान का हिस्सा है। हर अहमदी जहां भी वह है, अपनी मातृभूमि से प्यार करता है। यहां, जब डेनमार्क में अहमदी को राष्ट्रीयता मिलती है, तो वह देश का नियमित शहरी बन जाता है। इस पर फर्ज़ है कि देश की प्रगति और विकास के लिए अपने देश की सेवा करने के लिए काम करे और अपने देश की सेवा करे। और यह नहीं कि अपना धर्म छोड़ दे। अपने धर्म पर रहते हुए अपने देश के विकास के लिए काम करते रहें। यह सही इंटेग्रेशन है।

संसद के एक सदस्य ने आश्वस्त किया कि आप अन्य धार्मिक संगठनों से मिलेंगे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "अगर वे दूसरे मिलने के लिए तय्यार हों तो मैं भी तय्यार हूं। आप संस्कृति मामलों के मंत्री हैं यदि आप व्यवस्था करते हैं तो करें परन्तु वे हम से मिलने कि लिए तय्यार नहीं होंगे। वे कहते हैं कि हम अहमदी मुसलमान नहीं हैं। हम ने इस्लाम की शिक्षा छोड़ दी है।

जिहाद के बारे में एक प्रश्न के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि "जिहाद का अर्थ कड़ी मेहनत और प्रयास के हैं। इस्लाम की असली वास्तविकता शांति प्रदत शिक्षाओं को पहुंचाने के हैं। शांति और प्रेम संदेश दो यह जिहाद है। इस समय तो तलवार का जिहाद नहीं है। इस समय इस्लाम के ख़िलाफ कोई तलवार नहीं उठा रहा है। कोई भी अपने हथियारों से इस्लाम पर हमला नहीं कर रहा है। यह युग कलम के जिहाद है। इस्लाम पर मीडिया और साहित्य के प्रकाशन की दृष्टि से इस्लाम हमला किया जा रहा है तो उस उत्तर भी उसी रूप से दिया जाना चाहिए।

एक सदस्य ने कहा कि जमाअत अहमदिया कब और कैसे शुरू हुई थी।

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फरमाया: आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फरमाई थी कि इस्लाम पर एक ऐसा समय भी आएगा कि इस्लाम का केवल नाम रह जाएगा। इस्लाम की शिक्षाएं भुला दे जाएंगी और उन पर अनुकरण नहीं होगा। जब ऐसा समय आएगा तो अल्लाह तआला मुस्लमानों के मार्गदर्शन के लिए मसीह मौऊद और इमाम महदी की भेजेगा, जो सारी मानव जाति को एक हाथ पर इकट्ठा करेगा। हमारा विश्वास यह है कि इस भविष्यवाणी के अनुसार जिस मसीह तथा महदी ने इस्लाम के पुन: सुधार के लिए आना था वह आ चुका है और सारे नबियों के लिबास में आया है। हमारे निकट हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब कादियानी इमाम महदी और मसीह मौऊद हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: जमाअत की स्थापना पंजाब भारत के एक गांव कादियान से हुई। आपने 1889 ई में दावा किया और जमाअत अहमदिया की स्थापना हुई और 1908 ई में आप की मृत्यु हुई गई। आपकी मृत्यु के बाद, ख़िलाफत की प्रणाली शुरू हुई और मैं आपका पांचवां ख़लीफा हूं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "अन्य मुस्लिमों में और हम में एक बड़ा अंतर है। हम कहते हैं कि आने वाला मसीह तथा महदी आ चुका है दूसरे कहते हैं कि अभी नहीं आया।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया: जमाअत अहमदिया 1889 ई में शुरू हुई और हमारा मिशन यह है कि हमें सभी मुस्लिमों को एक हाथ पर इकट्ठा करना है। इस्लाम की सच्ची और वास्तविक शिक्षाओं का संदेश उन लोगों को प्रकट करना है कि अपने पैदा करने वाले को पहचानो। और उस के अधिकार अदा करो और प्रत्येक इन्सान दूसरे इंसान के अधिकार अदा करे और उसका सम्मान करे। मानव जाति की सेवा करो और एक-दूसरे की देखभाल करो। यह वह संदेश है जिसे हम हर जगह पहुंचा रहे हैं और हम हर जगह मिशनरी काम कर रहे हैं। इस्लाम के संदेश देने के अलावा, मानवता की भलाई के लिए भी काम कर रहे हैं। हमने अफ्रीका में स्कूल खोले हैं। अस्पताल बनाए हैं। पीने का साफ पानी उपलब्ध कराया है। सौर सिस्टम के माध्यम से बिजली प्रदान कर रहे हैं और बहुत सी परियोजनाओं पर काम कर रहे हैं और लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा कर रहे हैं।

अब यह जमाअत जिसका आरम्भ 1889 ई में शुरू हुई दुनिया भर में 207 देशों में फैली हुई है। डेनमार्क में अभी संख्या कम है। अफ्रीकी देशों में बड़ी संख्या में देश हैं।

पाकिस्तान में हमारे ख़िलाफ एक प्रसीक्योशन हो रही है और सरकार हमारे ख़िलाफ कानून बना रही है, लेकिन अभी भी बड़ी संख्या में हैं। इंडोनेशिया, मलेशिया, मुस्लिम देश हैं। उन में सरकार की तरफ से कोई कानून तो नहीं है,

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी

जी.एम. मुहम्मद शरीफ़

जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 9 August 2018 Issue No. 32

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

लेकिन फिर भी हम इन देशों में तब्लीग़ नहीं कर सकते हैं। लेकिन इसके बावजूद वे इन देशों में फैल रहे हैं और विकास कर रहे हैं। हर साल पांच लाख से अधिक लोग जमाअत में शामिल होते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया : पाकिस्तान में 1974 ई में हमारे ख़िलाफ कानून बना। इसके बाद 1984 ई में तत्कालीन पाकिस्तान के तानाशाह ज़िया उल हक़ ने जमाअत के ख़िलाफ बड़े कड़े नियम बनाए, जिनके अनुसार अहमदी अपनी आस्था के अनुसार अनुकरण नहीं कर सकते। अस्सलामो अलैकुम नहीं कह सकते। अपनी मस्जिद को मस्जिद नहीं कह सकते। बच्चों के मुस्लिम नाम नहीं हो सकते हैं। कोई भी इस प्रकार का तरीका जिस से इस्लामी मान्यताएं प्रकट होती हों वे हम नहीं कर सकते। अस्सलामो अलैकुम कहो तो तीन साल के लिए जेल की सज़ा है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : हमारे विरुद्ध देश व्यापी कानून केवल पाकिस्तान में है। इंडोनेशिया, मलेशिया में सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर हमारे ख़िलाफ कोई कानून नहीं है, लेकिन स्थानीय स्तर पर अपनी मस्जिदों को सील करते हैं। कभी-कभी स्थानीय पुलिस भी हमें परेशान करती है। तीन चार साल पहले, इंडोनेशिया में हमारे तीन इंडोनेशियाई अहमदियों को बहुत क्रूरता के साथ मारा था। इस पर, सरकारी प्रशासन की तरफ से जवाब मिलता है कि अधिकांश मुसलमान आपको पसंद नहीं करते हैं, आप इसके पक्ष में नहीं हैं, इसलिए हम कुछ भी नहीं कर सकते हैं। तो यह जवाब सरकारी प्रशासन की तरफ से मिलता है।

नाइजीरिया के वर्णन पर हुज़ूर अनवर ने कहा कि नाइजीरिया में एक बड़ा समुदाय है और यह संख्या में तेज़ी से बढ़ रहा है। सभी मुस्लिम देशों में हमारी जमाअत है। हम घाना, सेरियलोन, फ्रैंकफर्ट देश, माली, बुर्किना फासो, बेनिन इत्यादि में फैले हुए हैं और हमारी संख्या लगातार बढ़ रही है।

इंडोनेशिया में, हम लाख या1.5 लाख से अधिक हैं। वहां की आबादी 200 मिलियन से अधिक है। हमारी संख्या बहुत कम है लेकिन हमारी संख्या लगातार बढ़ रही है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : मलेशिया में ईसाईयों को उन के अधिकार नहीं मिल रहे हैं,वे शब्द अल्लाह प्रयोग नहीं कर सकते कहा। अल्लाह सभी धर्मों के लिए सभी के लिए है। प्रत्येक धर्म को इस शब्द का उपयोग करने का अधिकार है।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया : इन सभी चीजों के कारण, मसीह मौऊद का आना आनिवार्य हुआ ।

बेल्जियम के राजदूत H E POL DE WITTE को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने संबोधित करते हुए कहा कि बेल्जियम में आपके एयरपोर्ट पर जो त्रासदी हुई मुझे इसका खेद है वहाँ हमारी जमाअत ने सरकार से हमदर्दी की थी। और सरकार प्रशासन द्वारा इसकी सराहना की गई।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया : बेल्जियम में हमारे समुदाय के दो हज़ार से अधिक लोग हैं और वहां हमारे तीन सेन्टर हैं। ब्रसेल्स की मुख्य मस्जिद ब्रसेल्स में पूरी की जा रही है। हमारे सभी राजनेताओं के साथ अच्छे संबंध हैं। बेल्जियम में रहने वाले अहमदी अपने देशों के प्रति वफादार हैं। अहमदी लोग जिस देश में रहते हैं देश के प्रति वफादार हैं।

तुर्की का ज़िक्र करते हुए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि तुर्की में भी हमारा समुदाय है लेकिन हम वहाँ अब खुलकर तब्लीग़ नहीं कर सकते।

सांसद ने कहा कि जिस तरह से आप लोगों का विरोध किया, वैसे ही आरम्भ में ईसाईयों का विरोध हुआ था। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : आप ने ठीक फरमाया।

(शेष................)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

करने का तत्व भी निहित होता है और उपकार करने वाला कभी अपने उपकार को जता भी देता है परन्तु वह जो मां की भांति अपने स्वाभाविक आवेग से भलाई करता है वह कभी अपने आपको प्रदर्शित नहीं कर सकता। अत: भलाई करने का अंतिम दर्जा स्वाभाविक आवेग है जो मां की भांति हो। यह आयत न केवल प्रजा से संबंधित है बल्कि ख़ुदा के संबंध में भी है। ख़ुदा से न्याय का अभिप्राय यह है कि उसके उपकारों को स्मरण करके उसकी आज्ञा का पालन करना और ख़ुदा से अहसान यह है कि उसके अस्तित्व पर ऐसा विश्वास करना जैसे वह ख़ुदा को देख रहा है और ख़ुदा से ईताएज़िल क़ुरबा यह है कि उसकी उपासना न तो स्वर्ग की लालसा से हो न ही नर्क के भय से बल्कि यदि कल्पना की जाए कि न तो स्वर्ग है न ही नर्क, तब भी प्रेमावेग और आज्ञापालन में कोई अंतर न आए। इन्जील में लिखा गया है कि जो लोग तुम्हें अभिशाप दें उनके लिए वरदान चाहो। परंतु क़ुर्आन कहता है कि तुम स्वयं से कुछ भी न करो। तुम अपने हृदय, जो ख़ुदा के अलौकिक प्रकाशों का घर है से परामर्श लो कि ऐसे मनुष्य के साथ कैसा व्यवहार किया जाए। यदि ख़ुदा तुम्हारे हृदय में डाले कि यह अभिशाप देने वाला दया योग्य है और आकाश में वह अभिशाप योग्य नहीं, तो तुम भी अभिशाप न दो ताकि ख़ुदा के विरोधी न ठहराए जाओ। परन्तु यदि तुम्हारा कान्शन्स उसको असमर्थ नहीं ठहराता और तुम्हारे हृदय में डाला गया कि आकाश पर यह अभिशापी है तो तुम उसके लिए वरदान न चाहो जैसा कि शैतान के लिए किसी नबी ने वरदान नहीं चाहा। किसी भी नबी ने उसे अभिशाप से स्वतंत्र नहीं किया। पर किसी के लिए भी अभिशाप में जल्दी न करो क्योंकि बुरे विचार मिथ्या हैं और बहुत से अभिशाप अपने ही ऊपर पड़ जाते हैं। संभलकर पग उठाओ, प्रत्येक कार्य पूर्ण सतर्कता से करो और ख़ुदा से ही सहायता मांगो क्योंकि तुम अंधे हो। ऐसा न हो कि तुम न्यायप्रिय को अत्याचारी ठहराओ और सत्यवादी को झूठा। इस प्रकार तुम अपने ख़ुदा को रुष्ट कर दो और तुम्हारे सब पुण्य कर्म व्यर्थ हो जाएं ।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 9 से 11)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad